अंकुर

G20 भारत 2023 INDIA

आज़ादी का अमृत महोत्सव

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



128 वाँ अंक
अप्रैल 2023 से सितंबर 2023

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ - 160017



कुर्सियों पर बाएं सेः

श्री शीशराम वर्मा (वरिष्ठ उप महालेखाकार), श्री तेग सिंह (महालेखाकार),
श्री राकेश रंजन मिश्रा (हिन्दी अधिकारी)

खड़े हुए बाएं सेः

श्री अंकित कुमार (कनिष्ठ अनुवादक), सुश्री कविता शर्मा (कनिष्ठ अनुवादक),
श्री मनीष कुमार (कनिष्ठ अनुवादक)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अंकुर

128 वाँ अंक
अप्रैल 2023 से सितंबर 2023

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ - 160017

प्रकाशन विवरण

मुख्य संरक्षक	:	**श्री तेग सिंह** महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ - 160017
संरक्षक	:	**श्री शीशराम वर्मा** वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
मुख्य संपादक	:	**श्री अशोक कुमार राणा** वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक	:	**श्री राकेश रंजन मिश्रा** हिन्दी अधिकारी
संपादन सहयोग	:	**श्री शिवकेश** वरिष्ठ अनुवादक **श्री अंकित कुमार** कनिष्ठ अनुवादक **सुश्री कविता शर्मा** कनिष्ठ अनुवादक **श्री मनीष कुमार** कनिष्ठ अनुवादक
मुख पृष्ठ	:	**आनन्दपुर साहिब, रूपनगर, पंजाब**
अंक	:	**128 वाँ अंक**
प्रकाशक	:	**राजभाषा कार्यान्वयन समिति,** कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ - 160017
मूल्य	:	**राजभाषा के प्रति निष्ठा।**
मुद्रक	:	**कैपिटल ग्राफिक्स** एस.सी.ओ. 133-135, सैक्टर 17-सी, चंडीगढ़।

नोट : रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

अनुक्रमणिका

प्रकाशन विवरण	3
अनुक्रमणिका	4
गृह एवं सहकारिता मंत्री का संदेश	5-6
संदेश	7-10
मुख्य संरक्षक का संदेश	11
संरक्षक का संदेश	12
संपादकीय	13

आलेख

पर्यावरण संरक्षण	जिशान खान	15-17
अंतरिक्ष	जिशान खान	18-19
क्या इलेक्ट्रिक वाहन परिवहन का भविष्य हैं?	प्रमोद वर्मा	20-23
कहानियाँ और किस्से	केसर सिंह	24
सरकारी कार्यालयों में हिंदी भाषा का महत्व	प्रमोद वर्मा	25-28
आधुनिक भारत	प्रमोद वर्मा	29-30

कविता

जीवन : एक रण	हनिका शर्मा	36
सफ़र	जीशान खान	37
पिता	अंकित कुमार	38
नदिया	केसर सिंह	39
मामा	मनीष कुमार	40

कार्यालयीन समाचार

खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियाँ	41
नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ एवं सेवानिवृत्तियां	42-44
मीडिया की नजर से	45

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

सत्यमेव जयते

संजीव गोयल
महानिदेशक लेखा परीक्षा, रक्षा सेवाएं,
चंडीगढ़



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 128 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अंक के प्रकाशन हेतु इस संदेश को लिखते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

भाषाई विविधता से परे हमारे देश की एकता व अखंडता का प्रतीक हमारी राजभाषा हिंदी है। यह अत्यंत सुखद अनुभूति है कि राजभाषा हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए हिंदी को बढ़ावा देने की दिशा में आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका 'अंकुर' का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका के नियमित प्रकाशन से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ अधिकारियों व कर्मचारियों की रचनात्मक प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहन मिलता है। ऐसे अभिनव प्रयासों से ही हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी पल्लवित एवं पुष्पित हो रही है।

प्रशासनिक एवं साहित्यिक आभा को समेटे हुए पत्रिका 'अंकुर' के इस नवीन अंक के प्रकाशन में योगदान देने के लिए संपादक मंडल एवं रचनाकार अधिकारी व कर्मचारीगण बधाई के पात्र हैं। मुझे आशा है कि पत्रिका 'अंकुर' का यह अंक भी उत्कृष्ट एवं पठनीय सिद्ध होगा।

'अंकुर' के इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

संजीव गोयल

सत्यमेव जयते

नवनीत गुप्ता
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हरियाणा, चंडीगढ़



संदेश

मुझे यह जानकर अति हर्ष हो रहा है कि कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.) पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़ की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' का 128 वाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

हिंदी स्वभावतः सरल एवं सुबोध भाषा है। यह हमारे भावात्मक एवं सांस्कृतिक विकास को दर्शाती है। हिंदी हमारे स्वावलंबन एवं स्वाभिमान का आधार होने के साथ हमारी आत्मनिर्भरता का भी प्रतीक है। राजभाषा के प्रति पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण हमारा दायित्व है। विभागीय पत्रिकाएं अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लेखन के प्रति रुचि के साथ ही विभाग की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी भी उपलब्ध कराती हैं जो पाठकों के ज्ञान संवर्धन में सहायक होती हैं।

आशा है कि पत्रिका 'अंकुर' अपनी रचनात्मकता को इसी प्रकार सार्थक सिद्ध करती रहेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन में अपना अमूल्य सहयोग एवं योगदान प्रदान करने वाले सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन, उत्तरोत्तर प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

नवनीत गुप्ता

सत्यमेव जयते

शैलेन्द्र विक्रम सिंह
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हरियाणा, चंडीगढ़



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 128 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभागीय पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं तथा विभागीय कर्मचारियों को अपने विचार व्यक्त करने का सशक्त मंच प्रदान करती है।

हिंदी एक व्यावहारिक भाषा है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक भी है। हिंदी भाषा में सभी भाषाओं के शब्दों को अपने में समाहित करने का गुण है। हिंदी हमारी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसके प्रचार-प्रसार से लोगों को देश की समृद्ध विरासत से जुड़ने में मदद मिल सकती है। राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा नैतिक कर्तव्य ही नहीं बल्कि संवैधानिक दायित्व भी है। हमें सरल, सहज व सुगम हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए ताकि प्रशासन की बात जनमानस तक आसानी से पहुंच सके।

मुझे आशा है कि पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं राजभाषा हिंदी की प्रगति और प्रचार- प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। मैं, अंकुर के 128 वें अंक के प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं और पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूं।

शैलेन्द्र विक्रम सिंह

शैलेन्द्र विक्रम सिंह

सत्यमेव जयते

नाज़ली जे. शाईन
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपका कार्यालय हिन्दी पत्रिका "अंकुर" का 128 वाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है। इस उपलब्धि के लिए "अंकुर" पत्रिका परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

हिन्दी बहुत ही सहज, सरल और उदार भाषा है साथ ही एक सशक्त और वैज्ञानिक भाषा भी है। नई तकनीक और प्रौद्योगिकी के सहयोग से इसकी क्षमता और सामर्थ्य का और भी अधिक विस्तार हुआ है।

विभागीय कार्यालयों ने राजभाषा हिन्दी के प्रचार को नई दिशा प्रदान की है। संघ सरकार के विभिन्न कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिकाएँ राजभाषा हिन्दी के अनुपालन के संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करती हैं साथ ही कार्मिकों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी हैं। आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "अंकुर" की दीर्घ यात्रा इस दिशा में अपने महत्वपूर्ण योगदान की परिचायक है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि "अंकुर" पत्रिका का यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की भांति अपने उद्देश्य में सफल होगा।

पत्रिका के सफल एवं निरंतर प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

नाज़ली जे. शाईन

सत्यमेव जयते

तेग सिंह
महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़



मुख्य संरक्षक का संदेश

राजभाषा हिंदी की सेवा के प्रति संकल्पित रहते हुए हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 128 वें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति का साधन नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति भी होती है। आधिकारिक तौर पर हिंदी संघ की राजभाषा है और सांस्कृतिक तौर पर हमारी साझी संस्कृति की वाणी है। अतः हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

मुझे आशा है कि कार्यालय में राजभाषा हिंदी की वर्तमान स्थिति को और भी बेहतर बनाने के लिए सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का प्रयास जारी रहेगा तथा राजभाषा संबंधी सरकारी अनुदेशों का अनुपालन दृढ़ता और तत्परता के साथ किया जाएगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई।

तेग सिंह

सत्यमेव जयते

शीशराम वर्मा
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं यू.टी.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़



संरक्षक का संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि 'अंकुर' का 128वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। हिंदी पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों को दर्शाने के साथ-साथ हिंदी में कार्य करने का माहौल तैयार करने का कार्य करता है।

कार्यालय में हिंदी की महत्वपूर्ण गतिविधियों के साथ-साथ हिंदी पत्रिका का प्रकाशन यहाँ के कार्मिकों को प्रोत्साहित करता है।

आज के समय में सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है। महत्वपूर्ण बैठकों तथा महत्वपूर्ण अवसरों पर आमतौर पर हिंदी में ही बातचीत होने लगी है। हमें यही प्रयास करना है कि हमारे शासकीय काम-काज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग हो।

'अंकुर' पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

शीशराम

शीशराम वर्मा

सत्यमेव जयते



संपादकीय

सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में हो रही प्रगति को देखकर प्रसन्नता होती है। आजकल हिंदी का प्रयोग सरल हो गया है, इसलिए वह विकासोन्मुखी हो रही है। विभिन्न भाषाओं के प्रचलित शब्दों को ज्यों का त्यों देवनागरी लिपि में लिखकर न सिर्फ इसे समृद्धि प्रदान की जा रही है बल्कि भाषा संबंधी विवादों पर विराम लगाने का प्रयास भी किया जा रहा है। हिंदी के माध्यम से अलग-अलग प्रांत के लोग एक-दुसरे से जुड़ रहे हैं।

भाषा चाहे कोई भी हो, उसका ज्ञान प्राप्त करना उत्कृष्ट कार्य है। हिंदी भारतीय सांस्कृतिक विरासत की आधारशिला है। परन्तु भारतीय जनमानस में अंग्रेजी का आधिपत्य शोचनीय विषय है। इसलिए सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के दृष्टिकोण से हिंदी का बहुत महत्व है। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी क्षमता का प्रयोग अपनी इस भाषा के संवर्धन के लिए करें। अंकुर पत्रिका का यह अंक इसी क्रम में एक छोटा सा प्रयास है।

आशा है यह अंक पाठकों को पसंद आएगा।

जय हिंद! जय हिंदी!

राकेश रंजन मिश्रा
हिंदी अधिकारी


अलेख

पर्यावरण संरक्षण



जिशान खान

'पर्यावरण' दो शब्दों से मिलकर बना है "परि" जो हमारे चारों ओर है" , आवरण" जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है, अर्थात पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ होता है हमारे आस पास का वातावरण । पर्यावरण वह है जो कि प्रत्येक जीव के साथ जुड़ा हुआ है। हमारे चारों तरफ़ वह हमेशा व्याप्त होता है। हम मनुष्य अपनी समस्त क्रियाओं से इस पर्यावरण को भी प्रभावित करते हैं। इस प्रकार एक जीवधारी और उसके पर्यावरण के बीच अटूट संबंध भी होता है। मानव द्वारा आर्थिक उद्देश्य और जीवन में विलासिता के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रकृति के साथ खिलवाड़ ने प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन नष्ट किया है, जिससे प्राकृतिक व्यवस्था या प्रणाली के अस्तित्व पर ही संकट उत्पन्न हो गया है। हमारे आज के समाज में इसके दूषित होने के कारण अनेक समस्याओं ने जन्म ले लिया है जैसे कि 1. जलवायु परिवर्तन 2. जैव विविधता का ख़त्म होना 3. समुद्री जल स्तर में वृद्धि 4. ऑस्ट्रेलिया, ब्राज़ील, टर्की , यूरोप और उत्तराखंड के जंगलों में भयानक आग का फैलना 5. बाढ़, सूखा इत्यादि।

भारतीय सभ्यता में पर्यावरण को एक विशेष दर्जा दिया गया है। भारतीय समाज अपने को पर्यावरण से अलग नहीं मानता और उनकी नज़र में समस्त प्रकृति एक ही इकाई है, जिसका मनुष्य भी एक हिस्सा है। इसके इसी महत्व के कारण प्राचीन भारत में प्रकृति को विशिष्ट दर्जा प्राप्त है क्योंकि यही हमारे जीवन की बुनियाद है। ज्यादातर पर्यावरणीय समस्याएँ मानव जनसंख्या और मानव द्वारा संसाधनों के उपभोग में वृद्धि से जुड़ी हैं। पर्यावरणीय अवनयन के अंतर्गत पर्यावरण में होने वाले वे सारे परिवर्तन आते हैं जो अवांछनीय हैं और पूरी पृथ्वी पर जीवन को खतरा उत्पन्न करते हैं। पर्यावरणीय अवनयन के साथ मिलकर जनसंख्या में हो रही वृद्धि, औद्योगीकरण एवं शहरीकरण की तीव्र गति तथा आर्थिक और राजनैतिक हितों का टकराव सारी पर्यावरणीय समस्याओं के मूल कारण हैं।

पर्यावरणीय समस्याएँ

1. संसाधन न्यूनीकरण

संसाधन न्यूनीकरण का अर्थ है प्राकृतिक संसाधनों का मनुष्य द्वारा अपने आर्थिक लाभ हेतु इतनी तेजी से इस्तेमाल करना कि पुनर्भरण (replenishment) न हो पाए। संसाधनो के खात्मे के लिये जनसंख्या के दबाव, तेज वृद्धि दर और पाश्चात्यीकरण जिम्मेदार है।

संसाधनों को दो वर्गों में विभक्त किया जाता है - नवीकरणीय संसाधन और अनवीकरणीय संसाधन। इसके आलावा कुछ संसाधन इतनी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं कि उनका क्षय नहीं हो सकता उन्हें अक्षय संसाधन कहते हैं जैसे सौर ऊर्जा।

अनवीकरणीय संसाधनों का तेजी से दोहन उनके भण्डार को समाप्त कर मानव जीवन के लिये कठिन परिस्थितियां पैदा कर सकता है। कोयला, पेट्रोलियम भण्डारों का जिस तेजी से मनुष्य दोहन कर रहा है ये एक न एक दिन समाप्त हो जायेंगे। हमारी आने वाली पीढ़ी को इसका दुष्परिणाम भुगतना पड़ेगा।

2. प्रदूषण

प्रदूषण किसी पदार्थ या ऊर्जा का पर्यावरण में प्रवेश और उसका प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति हानिकारक होना। इस तरह के अवांछित तत्व को प्रदूषक या दूषक कहते हैं।

वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, रेडियोधर्मी प्रदूषण, प्रकाश प्रदूषण आज के समाज में आम बात है वायु का गुणवत्ता स्तर गिरता जा रहा है जिससे बच्चों और बूढ़ों को तकलीफ होती है। प्रदूषण के कारण ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएं विकराल रूप धारण करती जा रही हैं जिनका प्रत्यक्ष रूप से समाज के पतन में अहम भगीदारी है।

3. जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन उन्हीं में से एक है जलवायु परिवर्तन के कारण ही पृथ्वी पर मौसम परिवर्तन होता है । इसके कारण मौसम परिवर्तित होता है, जिससे फसलों की बुआई प्रभावित होती है। यह देश की खाद्य सुरक्षा को संकट में ले जा सकता

है। समुद्र के जल स्तर में बदलाव के कारण लोगों का विस्थापन भी आज के समाज के लिए चिंता का विषय है।

4. जैव विविधता ह्रास

पृथ्वी पर उपस्थित विभिन्न प्रकार के पारितंत्र में उपस्थित जीवों व वनस्पतियों की प्रजातियों के प्रकार में कमी को जैव विविधता ह्रास कहते हैं।

5. प्राकृतिक आपदाएँ

इनमें चक्रवात, तेज तूफान, भूकंप, ज्वालामुखी का फटना, सुनामी, अत्यधिक बारिश, सूखा आदि शामिल है।

पर्यावरण संरक्षण का महत्व:-

पर्यावरण संरक्षण का समस्त प्राणियों के जीवन तथा इस धरती के समस्त प्राकृतिक परिवेश से घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्रदूषण के कारण सारी पृथ्वी दूषित हो रही है और निकट भविष्य में मानव सभ्यता का अंत दिखाई दे रहा है। इस स्थिति को ध्यान में रखकर सन् 1992 में ब्राजील में विश्व के 174 देशों का 'पृथ्वी सम्मेलन' आयोजित किया गया।

इसके पश्चात सन् 2002 में जोहान्सबर्ग में पृथ्वी सम्मेलन आयोजित कर विश्व के सभी देशों को पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देने के लिए अनेक उपाय सुझाए गये। वस्तुतः पर्यावरण के संरक्षण से ही धरती पर जीवन का संरक्षण हो सकता है, अन्यथा मंगल ग्रह आदि ग्रहों की तरह धरती का जीवन-चक्र भी समाप्त हो जायेगा। प्राचीन समय मे भौतिक पर्यावरण के प्रति लोग बहुत ही रुचि रखते थे। परंतु वर्तमान समय में इसका विपरीत है। लोग इसे मिटाने की ओर दिन प्रतिदिन तत्पर होते जा रहे हैं और इसका खूब दोहन कर रहे हैं। सुंदर वनो को उजाड़ कर वहाँ पर बड़े-बड़े नगरों का निर्माण करने में लगे हैं, बड़ी-बड़ी चट्टानों को मिटाकर वहां पर रास्ते निकालने में लगे हैं। ये जमीन हमारी है, ये वातावरण हमारा है इसलिए इसकी रक्षा करना भी हमारा कर्त्तव्य है।

भारत में बनाये गये अधिनियम :

भारत में पर्यावरण क़ानून पर्यावरण (रक्षा) अधिनियम 1986 के तहत हमारे पर्यावरण को दूषित करने वाले घटकों पर रोक लगाते हैं, जिससे हमारा पर्यावरण साफ़ एव निर्मल रहे। इसकी रूपरेखा केन्द्रीय सरकार के विभिन्न केन्द्रीय और राज्य प्राधिकरणों के क्रियाकलापों के समन्वयन के लिए तैयार की गई है जिनकी स्थापना पिछले कानूनों के तहत की गई है जैसा कि जल अधिनियम और वायु अधिनियम, जो कि जल प्रदूषण एवं वायु प्रदूषण पर रोक लगाते हैं।

भारतीय वन अधिनियम, 1927 और वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 प्रमुख हैं, जिनका प्रमुख उद्देश्य भारतीय वन्य जीव एव प्राणियों की रक्षा करना है।

एक राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण का भी गठन किया गया है।

पर्यारण दूषित होने का प्रभाव निम्नलिखित क्षेत्रों पर पड़ता है:

1. कृषि - मानव जीवन का आधार कृषि है। मृदा में रासायनिक कीटनाशक व उर्वरकों के बेतहाशा प्रयोग से उसमें कैंसर कारक तत्वों की मात्रा खतरनाक ढंग से बढ़ रही है जो सब्जियों व अन्य खाद्य पदार्थों के साथ मानव शरीर व समस्त खाद्य श्रृंखला में भी शामिल हो रही है।

दिल्ली में यमुना नदी और कानपुर-वाराणसी में गंगा नदी की हालत किसी से छुपी नहीं है। जलवायु परिवर्तन से इस आपदा की तीव्रता में और बढ़ोत्तरी ही होने वाली है, जहाँ गंगा जैसी नदी के विलुप्त होने तक की बातें की जा रही हैं।

2. पारिस्थितिकी संतुलन -

- भू-जैव-रासायनिक चक्र (Bio Geochemical cycle) को संतुलित बनाये रखने में वनस्पतियों, जीवाणुओं और मृदा की भूमिका।
- वनों द्वारा मिट्टी को बाँधे रखकर मृदा अपरदन रोकना, भूस्खलन व बाढ़ जैसी आपदाएं रोकना।

वनीय विनाश और पर्यावरण प्रदूषण बढ़ते जाने से ये सारी व्यवस्थाएं बदल रही हैं। इनका सीधा असर मानव जीवन पर पड़ना तय है। केपटाउन में 'जीरो वाटर डे' की चेतावनी जारी की गयी थी। दिल्ली एन.सी.आर. क्षेत्र तथा संपूर्ण भारत में भी भू-जल स्तर खतरनाक ढंग से नीचे जा रहा है।

3. अर्थव्यवस्था :- भारत एव विश्व की अर्थव्यवस्था पर्यावरण के साथ जुड़ी हुई है। प्राकृतिक आपदाओं से विकास प्रभावित होता है तथा देश का पैसा लोगों को राहत सामग्री एवं विस्थापन में खर्च होता है जो देश के लिए चिंता का विषय है। आदिवासी समाज जिनका जीवन इसके साथ जुड़ा हुआ है,

पर्यावरण में बदलाव उनके लिए जीवन-मरण का सवाल बन जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य :-

- UN ने 2020-2030 की अवधि को "पारितंत्र पुनर्स्थापना का दशक" के तौर पर पहचाना है और 2022 में विश्व के कुल 10 पारितंत्र पुनर्स्थापना प्रोजेक्ट्स को मान्यता व सहायता देने का निर्णय लिया है। UN ने सतत विकास कार्यक्रमों के तहत 30 उद्देश्य निर्धारित किये हैं जिनमें निम्नलिखित पॉइंट प्रमुख हैं :-
- गरीबी के सभी रूपों की पूरे विश्व से समाप्ति।
- भूख की समाप्ति, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा।
- सभी आयु के लोगों में स्वास्थ्य, सुरक्षा और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा।
- लैंगिक समानता प्राप्त करने के साथ ही महिलाओं और लड़कियों को सशक्त करना।
- देशों के बीच और भीतर असमानता को कम करना।

निष्कर्ष :-

पर्यावरण का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से है। आज की आवश्यकता यह है कि पर्यावरण के विस्तृत अध्ययन के साथ-साथ इससे सम्बन्धित व्यावहारिक ज्ञान पर बल दिया जाए। आधुनिक समाज को पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याओं की शिक्षा व्यापक स्तर पर दी जानी चाहिए। साथ ही इससे निपटने के बचावकारी उपायों की जानकारी भी आवश्यक है। ऐसी विषम परिस्थिति में समाज को उसके कर्त्तव्य तथा दायित्व का एहसास होना आवश्यक है। इस प्रकार समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा की जा सकती है। शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण का ज्ञान मानव-जीवन के बहुमुखी विकास का एक प्रबल साधन है।

लोग अपने आस-पास के आवरण को नष्ट करने के हर संभव प्रयास में लगे हुए हैं। पर्यावरण की सुरक्षा तो सिर्फ दिमाग में ही है। जो जमीन कल तक उपजाऊ थी आज देखा जाए तो उसमें अच्छी फसल नहीं होती और ऐसा प्रतीत होता है कि आने वाले समय मे यह बंजर हो जाएगी और इससे जीवन समाप्त हो जाएगा और यह फिर से वही आकाश पिण्ड का गोला बनकर रह जायेगी। अगर हम चाहते है कि यह पृथ्वी ऐसे ही आबाद रहे तो हमें वातावरण को संरक्षित करना होगा। अतः पर्यावरण को बचाना, इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए सहेज कर रखना एवं इसका रख-रखाव राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय एवं तमाम समाज की जिम्मेदारी है।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है
- सुमित्रानंदन पंत

अंतरिक्ष



जिशान खान

सभ्यताओं के उद्गम से ही अंतरिक्ष आकर्षण का केंद्र बना रहा है। प्राचीन समय से ही इसमें छुपे हुए रहस्यों की खोज के लिए अनेक विद्वानों का योगदान है, जिनमे आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, न्यूटन, एरिस्टोटल आदि का योगदान रहा है। आसमान में तारों की अद्भुत स्थिति इस रोमांच को अधिक कर देती है। ब्रह्मांड का अनंत स्वरुप, इसमें अनगिनत आकाश गंगाएं तथा तारों के बनने से लेकर बिगड़ने की दास्तान एक अलग ही आयाम का भ्रमण कराती है। स्पेक्ट्रल लाइंस (Spectral Lines) की लंबे तरंग दैर्ध्य (Longer Wavelengths) की ओर विस्थापन की प्रक्रिया को रेड शिफ्ट कहते हैं। मूल रूप इस प्रक्रिया में विस्थापित तरंगों का स्पेक्ट्रम (Spectrum) में लाल रंग होता है, इसलिए इसे "रेड शिफ्ट" कहा जाता है। मुख्य रूप से रेड शिफ्ट पृथ्वी से बहुत दूर मौजूद आकाशगंगाओं और खगोलीय पिंडों में दिखाई देता है। इस रेड शिफ्ट के कारण ही हमें ब्रह्मांड के फैलने के सिद्धांत का पता लगा। यह कितनी विचित्र बात है कि इस संसार का कोई छोर ही नहीं है और हम उसका छोर नापने की कोशिश में लगे हैं।

जब इस पहेली से निकलो तो अगली पहेली तैयार, जिसका नाम है ब्लैक होल। ब्लैक होल किसी तारे के सुपरनोवा विस्फोट होने के बाद की स्थिति है, जहाँ पर गुरुत्वाकर्षण की शक्ति अत्यधिक हो जाती है। सिंगुलारिटी पॉइंट के बाद प्रकाश भी वहां से नहीं गुजर सकता। इसी पहेली को सुलझाते हुए कई सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया। मशहूर वैज्ञानिक एल्बर्ट आइंस्टीन ने सापेक्षता के सामान्य सिद्धांत पर कार्य किया जो एक ऐसा सिद्धांत है जो ये बताता है कि स्पेसटाइम गुरुत्व एक दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं। गुरुत्व को स्पेसटाइम में क्रियाशील क्षेत्र बल के रूप में देखने के बजाय, आइंस्टाइन ने सुझाव दिया कि वह खुद स्पेसटाइम की ज्यामितीय संरचना को परिवर्तित करती है। सामान्य सिद्धांत के अनुसार, समय उन स्थानों पर धीरे-धीरे चलता है जिनकी गुरुत्वाकर्षण क्षमता कम होती है तथा प्रकाश की किरणें गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र की उपस्थिति में नई दिशा में मुड़ जाती हैं। कितने आश्चर्य की बात है कि समय भी निश्चित नहीं है।

न्यूक्लियर फ्यूज़न द्वारा सूरज में ऊर्जा का बनना जिससे पृथ्वी पर जीवन संचालित है एवं तमाम जैविक क्रियाएं इसी से उपजती हैं। अंतरिक्ष के माध्यम से हम ऊर्जा के असीमित भण्डार को खोजने में कामयाबी की तरफ अग्रसर हो रहे हैं, जैसा कि चाइना ने इसी तकनीक के माध्यम से आर्टिफिशल सूरज का निर्माण करके किया है।

भारत का अंतरिक्ष में योगदान:

भारत में आधुनिक अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई थे। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य राष्ट्रीय हित में अंतरिक्ष तकनीक एवं उसके अनुप्रयोगों का विकास करना है। भारत ने अपने कम बज़ट में भी उच्च अंतरिक्ष तकनीक को हासिल करने में सफलता प्राप्त की और आज वह श्रेष्ठ अंतरिक्ष तकनीक वाले देशों की कतार में शामिल है। वर्ष 1969 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (ISRO) की स्थापना हुई। यह भारत सरकार की अंतरिक्ष एजेंसी है। इसे अंतरिक्ष अनुसंधान के लिये देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और उनके करीबी सहयोगी और वैज्ञानिक विक्रम साराभाई के प्रयासों से स्थापित किया गया। आर्यभट्ट भारत का पहला उपग्रह था जिसे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी 'इसरो' ने सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में स्थापित किया था। इस उपग्रह को 19 अप्रैल 1975 को अंतरिक्ष में भेजा गया था।

1. 27 मार्च 2019 को भारत ने मिशन शक्ति को सफलतापूर्वक अंजाम देते हुए एंटी-सैटेलाइट मिसाइल (A-SAT) से तीन मिनट में एक लाइव भारतीय सैटेलाइट को सफलतापूर्वक नष्ट कर दिया।

2. चंद्रयान-3 चाँद पर खोजबीन करने के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा भेजा गया

तीसरा भारतीय चंद्र मिशन है जो कि चाँद के साउथ पोल के विषय में अध्ययन करके हमारी समझ को और बढ़ाने में कारगर साबित होगा।

3. देश में दूरसंचार, प्रसारण, भू-पर्यवेक्षण (Earth Observation) और ब्रॉडबैंड अवसंरचना के क्षेत्र में विकास के लिये इसरो ने उपग्रह संचार के माध्यम से कार्यक्रमों को चलाया। मौसम की सटीक जानकारी के द्वारा कृषि और जल प्रबंधन तथा आपदा के समय वक्त रहते बचाव कार्य इसी तकनीक के द्वारा संभव हो सका। भारत में वन सर्वेक्षण रिपोर्ट भी इसी तकनीक द्वारा तैयार होती है।

अंतरिक्ष मनोरंजक होने के साथ-साथ अत्यंत खूबसूरत है। यह रहस्यों से भरा हुआ ब्रह्माण्ड है। हमारे पूर्वज इसके रहस्यों को जानने का निरंतर प्रयास करते रहे। अतः यह हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम अपनी इस विरासत को सम्भाल कर रखे। युवा एवं प्रतिभाशाली छात्रों को इस विषय में गहन शोध करने की आवश्यकता है ताकि हम अपने देश और समाज को तरक्की के रास्ते पर ले जा सकें।

प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता
इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती
- सुभाषचंद्र बोस

क्या इलेक्ट्रिक वाहन परिवहन का भविष्य हैं?



प्रमोद वर्मा

परिवहन आधुनिक जीवन की मूलभूत आवश्यकता है, लेकिन पारंपरिक दहन इंजन तेजी से पुराना होता जा रहा है। पेट्रोल और डीज़ल का उपयोग हमारे ग्रह को नष्ट कर रहा है। जीवाश्म ईंधन की उपलब्धता सीमित है और उनका उपयोग हमारे ग्रह को नष्ट कर रहा है। पेट्रोल और डीजल वाहनों से होने वाले जहरीले उत्सर्जन से सार्वजनिक स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। दुनिया के 10 सबसे प्रदूषित शहरों में से नौ शहर होने का संदिग्ध गौरव भारत को प्राप्त है। उत्तर भारत के इन नौ शहरों में ग्रेटर नोएडा, नोएडा, लखनऊ और दिल्ली शामिल हैं। जबकि उत्तरी भारत की प्रदूषित हवा, आसमान और मानव फेफड़ों में कई कारक योगदान करते हैं, वाहन प्रदूषण भी इसके लिए काफी हद तक जिम्मेदार है।

इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी): ईवी आंतरिक दहन इंजन के बजाय इलेक्ट्रिक मोटर पर चलती है और इसमें ईंधन टैंक के बजाय बैटरी होती है। ये वाहन उन बैटरियों से ऊर्जा प्राप्त करते हैं जिन्हें आमतौर पर कार में नीचे की ओर रखा जाता है। अक्सर एक अतिरिक्त बैटरी भी होती है जो बिजली, रोशनी और ऐसे अन्य तत्वों को शक्ति प्रदान करती है। इलेक्ट्रिक कारों की बैटरियां रिचार्जेबल होती हैं और इन्हें बिजली ग्रिड से चार्ज किया जा सकता है। इसका मतलब है कि या तो दीवार पर लगे चार्जर या फास्ट चार्जर (जैसे कि सर्विस स्टेशनों पर) की आवश्यकता होती है। सामान्य तौर पर, ईवी को चलाने की लागत कम होती है क्योंकि उनमें चलने वाले हिस्से कम होते हैं और वे पर्यावरण के अनुकूल भी होते हैं। भारत में, ईवी के लिए ईंधन लागत लगभग 80 पैसे प्रति किलोमीटर है। इसकी तुलना पेट्रोल की कीमत से करें जो आज भारतीय शहरों में 100 रुपये प्रति लीटर से अधिक है, या पेट्रोल आधारित वाहन चलाने के लिए 7-8 रुपये प्रति किलोमीटर है। इलेक्ट्रिक वाहनों का उत्सर्जन प्रभाव पेट्रोल या डीजल वाहनों की तुलना में बहुत कम है। दक्षता के दृष्टिकोण से इलेक्ट्रिक वाहन पहियों को बिजली देने के लिए ग्रिड से लगभग 60% विद्युत ऊर्जा को कवर कर सकते हैं, लेकिन पेट्रोल या डीजल कारें ईंधन में संग्रहीत ऊर्जा का केवल 17% -21% ही पहियों में परिवर्तित कर सकती हैं। यह लगभग 80% की बर्बादी है। इलेक्ट्रिक वाहनों में लगभग शून्य उत्सर्जन होता है और जब बिजली उत्पादन को ध्यान में रखा जाता है, तब भी पेट्रोल या डीजल वाहन औसत ईवी की तुलना में लगभग 3 गुना अधिक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित करते हैं।

वाहनों का उपयोग वाहनों या माल के परिवहन के लिए किया जाता है, चाहे वह जमीन पर हो, पानी पर हो या हवा के माध्यम से । जब हम इस परिभाषा को देखते हैं, तो केवल इलेक्ट्रिक कारों जैसी चीज़ों के बारे में सोचना आसान होता है। हालाँकि, इलेक्ट्रिक वाहनों में अन्य सड़क परिवहन (जैसे ट्रक, बाइक और बसें), साथ ही इलेक्ट्रिक विमान और यहां तक कि नावें भी शामिल हैं।

तकनीकी आधार पर इलेक्ट्रिक वाहन के प्रकार:

- इलेक्ट्रिक वाहन: इस प्रकार के इलेक्ट्रिक वाहन में बैटरी ही एकमात्र शक्ति स्रोत है।
- हाइब्रिड वाहन: इनमें एक इलेक्ट्रिक मोटर के साथ दहन इंजन के संयोजन का उपयोग किया जाता है, जो वाहन के गति में होने पर रिचार्ज होता है।
- प्लग-इन हाइब्रिड: इनमें दहन इंजनों को रिचार्जेबल बैटरियों के साथ भी जोड़ा जाता है, लेकिन प्लग इन करने पर बैटरियों को सीधे भी रिचार्ज किया जा सकता है।
- ईंधन-सेल वाहन: ये हाइड्रोजन जैसे ऑनबोर्ड ईंधन से अपनी बिजली उत्पन्न करते हैं। उन्हें रिचार्ज करने के लिए किसी विद्युत आउटलेट में प्लग लगाने की आवश्यकता नहीं है।

इलेक्ट्रिक वाहनों का इतिहास

इलेक्ट्रिक वाहन वर्तमान और भविष्य की बहुत अच्छी अवधारणा को महसूस करते हैं। नई प्रौद्योगिकियों का मतलब है कि दुनिया भर के निर्माता अपना ध्यान पूरी तरह या आंशिक रूप से इलेक्ट्रिक बेड़े पर केंद्रित कर रहे हैं। लेकिन वास्तव में विद्युत परिवहन के लिए बिजली का उपयोग करने

का विचार 100 वर्षों से भी अधिक पुराना है। 19वीं शताब्दी के दौरान, इलेक्ट्रिक वाहनों के साथ विभिन्न प्रयोग हुए। पहली बैटरी चालित इलेक्ट्रिक मोटर का आविष्कार 1834 में थॉमस डेवनपोर्ट द्वारा किया गया था। कुछ लोगों का सुझाव है कि पहला स्व-संचालित, मानव-वाहक इलेक्ट्रिक वाहन 1881 में फ्रांसीसी आविष्कारक गुस्ताव ट्रॉवे द्वारा बनाया गया था। पहली इलेक्ट्रिक कारों के विवरण पर अक्सर बहस होती रहती है। 1900 के दशक तक इलेक्ट्रिक गाड़ियाँ, कारें और यहाँ तक कि रेलगाड़ियाँ भी उभरने लगीं। सड़क पर कारों का एक बड़ा हिस्सा इलेक्ट्रिक था। अगले दशकों में, विभिन्न वैज्ञानिकों और इंजीनियरों ने डिजाइन के साथ छेड़छाड़ की। हालाँकि, इन वाहनों के साथ मुख्य मुद्दा यह था कि उपयोग की जाने वाली बैटरियाँ रिचार्जेबल नहीं थीं, जिससे वे व्यावसायिक उपयोग के लिए अव्यावहारिक हो गईं। इलेक्ट्रिक कारें जल्द ही अविश्वसनीय रूप से लोकप्रिय हो गईं, खासकर अमेरिका में। फोर्ड की पेट्रोल कारों के बड़े पैमाने पर उत्पादन और तेल की सस्ती कीमत का जल्द ही मतलब था कि इलेक्ट्रिक वाहन प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते थे।

1970 के दशक तक ऐसा नहीं था कि इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी में रुचि तब नवीनीकृत हुई जब सिटीकार जैसे वाहनों का उत्पादन किया गया। 1990 के दशक के मध्य में, जनरल मोटर्स ने EV1 लॉन्च किया और टोयोटा प्रियस पहली बड़े पैमाने पर उत्पादित हाइब्रिड कार बन गई। 2000 के दशक के अंत तक जब टेस्ला ने अपना पहला रोडस्टर लॉन्च किया। आजकल, अधिकांश प्रमुख निर्माताओं के पास कम से कम कुछ इलेक्ट्रिक या हाइब्रिड वाहन हैं और बैटरी निर्माण पहले से कहीं बेहतर है।

1900 के दशक में, इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) ईंधन-आधारित वाहनों की तुलना में पिछड़ गया था, अब शायद ऐसा नहीं होगा।

इलेक्ट्रिक वाहन संबंधित चुनौतियाँ:

- चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी: उपभोक्ता के लिए असली चुनौती भारत में चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी है। ईवी आमतौर पर लिथियम-आधारित बैटरी द्वारा संचालित होते हैं। इन बैटरियों को कार के लिए आमतौर पर हर 200-250 किलोमीटर पर चार्ज करने की आवश्यकता होती है। इसलिए, चार्जिंग प्वाइंट के सघन प्रसार की आवश्यकता है।
- धीमी चार्जिंग की समस्या: निजी लाइट-ड्यूटी स्लो चार्जर का उपयोग करके मालिक के घर पर वाहन को पूरी तरह चार्ज करने में 12 घंटे तक का समय लगता है। घर पर धीमी चार्जिंग की इस तकनीकी समस्या को हल करने के लिए, देश भर में कुछ चार्जिंग स्टेशन हैं। हमारे जैसे बड़े और घनी आबादी वाले देश में यह अत्यंत अपर्याप्त है।
- ईवी उत्पादन के लिए एक स्थिर नीति का अभाव: ईवी उत्पादन एक पूंजी गहन क्षेत्र है जिसमें संतुलन और लाभ प्राप्ति के लिए दीर्घकालिक योजना की आवश्यकता होती है, ईवी उत्पादन से संबंधित सरकारी नीतियों में अनिश्चितता उद्योग में निवेश को हतोत्साहित करती है।
- तकनीकी चुनौतियाँ: भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स के उत्पादन में तकनीकी रूप से कमी है जो ईवी उद्योग की रीढ़ हैं, जैसे बैटरी, अर्धचालक, नियंत्रक, आदि।
- संबद्ध बुनियादी ढांचे के समर्थन की कमी: एसी बनाम डीसी चार्जिंग स्टेशनों पर स्पष्टता की कमी, ग्रिड स्थिरता और रेंज की चिंता (डर है कि बैटरी जल्द ही बिजली से बाहर हो जाएगी) अन्य कारक हैं जो ईवी उद्योग के विकास में बाधा डालते हैं।
- घरेलू उत्पादन के लिए सामग्री की उपलब्धता का अभाव: बैटरी ईवी का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। भारत लिथियम-आयन बैटरी के आयात के लिए जापान और चीन जैसे देशों पर निर्भर है।
- कुशल श्रमिकों की कमी: ईवी की सर्विसिंग लागत अधिक होती है और सर्विसिंग के लिए उच्च स्तर के कौशल की आवश्यकता होती है। भारत में ऐसे कौशल विकास के लिए समर्पित प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का अभाव है।

इलेक्ट्रिक वाहन के लाभ:

- कम परिचालन लागत: इलेक्ट्रिक वाहन को चलाने की लागत समकक्ष पेट्रोल या डीजल वाहन की तुलना में

बहुत कम है। इलेक्ट्रिक वाहन अपनी बैटरी को चार्ज करने के लिए पेट्रोल या डीजल जैसे जीवाश्म ईंधन का उपयोग करने के बजाय बिजली का उपयोग करते हैं। इलेक्ट्रिक वाहन अधिक कुशल होते हैं, और बिजली की लागत के साथ संयुक्त होने का मतलब है कि इलेक्ट्रिक वाहन को चार्ज करना आपकी यात्रा आवश्यकताओं के लिए पेट्रोल या डीजल भरवाने की तुलना में सस्ता है। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को अधिक पर्यावरण-अनुकूल बना सकता है। यदि घर पर स्थापित नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, जैसे सौर पैनलों की मदद से चार्जिंग की जाए तो बिजली की लागत को और भी कम किया जा सकता है।

- कम रखरखाव लागत : इलेक्ट्रिक वाहनों की रखरखाव लागत बहुत कम होती है क्योंकि उनमें आंतरिक दहन वाहन जितने चलने वाले हिस्से नहीं होते हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों की सर्विसिंग आवश्यकताएं पारंपरिक पेट्रोल या डीजल वाहनों की तुलना में कम होती हैं। इसलिए, इलेक्ट्रिक वाहन चलाने की वार्षिक लागत काफी कम है।
- शून्य उत्सर्जन : इलेक्ट्रिक वाहन चलाने से आपको अपने कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद मिल सकती है । आप घरेलू बिजली के लिए नवीकरणीय ऊर्जा विकल्प चुनकर अपने वाहन को चार्ज करने के पर्यावरणीय प्रभाव को कम कर सकते हैं।
- कर और वित्तीय लाभ : इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने पर रजिस्ट्रेशन फीस और रोड टैक्स पेट्रोल या डीजल वाहनों की तुलना में कम है। आप किस राज्य में हैं, इसके आधार पर सरकार द्वारा कई नीतियां और प्रोत्साहन पेश किए जाते हैं।
- इलेक्ट्रिक वाहन चलाने में आसान और शांत होते हैं : इलेक्ट्रिक वाहनों में गियर नहीं होते हैं और ये चलाने में बहुत सुविधाजनक होते हैं। इसमें कोई जटिल नियंत्रण नहीं है, बस गति बढ़ाएं, ब्रेक लगाएं और चलाएं। जब आप अपने वाहन को चार्ज करना चाहते हैं, तो बस इसे घर या सार्वजनिक चार्जर में प्लग करें। इलेक्ट्रिक वाहन शांत भी होते हैं, इसलिए वे पारंपरिक वाहनों से होने वाले ध्वनि प्रदूषण को कम करते हैं।
- घर पर चार्जिंग की सुविधा : कल्पना कीजिए कि व्यस्त समय के दौरान आप एक व्यस्त ईंधन स्टेशन पर हैं और आपको अपने कार्यस्थल पर पहुंचने में देर हो रही है। इलेक्ट्रिक वाहन से इन समस्याओं को आसानी से दूर किया जा सकता है। जाने की योजना बनाने से पहले बस अपने वाहन को 4-5 घंटे के लिए अपने होम चार्जर में प्लग करें। यदि आप घर पर पार्किंग स्थल पर चार्जर प्राप्त करने में सक्षम हैं, तो अपनी यात्रा की योजना पहले से बनाना बहुत सुविधाजनक है।
- कोई ध्वनि प्रदूषण नहीं: इलेक्ट्रिक वाहनों में चुपचाप काम करने की क्षमता होती है क्योंकि इनमे कोई इंजन नहीं मतलब कोई शोर नहीं। इलेक्ट्रिक मोटर इतनी चुपचाप काम करती है कि आपको यह जांचने के लिए अपने उपकरण पैनल में झांकना होगा कि यह चालू है या नहीं। इलेक्ट्रिक वाहन इतने शांत होते हैं कि निर्माताओं को उन्हें पैदल चलने वालों के लिए सुरक्षित बनाने के लिए झूठी ध्वनियां जोड़नी पड़ती हैं।

भारत में बढती इलेक्ट्रिक वाहन की संभावनाएँ:

- निजी क्षेत्र ने ईवी के प्रभुत्व की अनिवार्यता की सराहना की है।
- अमेज़ॅन, स्विगी, ज़ोमैटो और आइकिया जैसी कंपनियां डिलीवरी के लिए ईवी तैनात कर रही हैं।
- महिंद्रा जैसे कार निर्माता ओला जैसे उपभोक्ताओं के साथ साझेदारी कर रहे हैं, जो अधिक ईवी डिलीवरी और राइड-हेलिंग सेवाएं सुनिश्चित करेगी।

भारत में इलेक्ट्रिक वाहन के भविष्य के लिए :

- ईवीएस में अनुसंधान एवं विकास बढ़ाना: भारतीय बाजार को स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता है जो रणनीतिक और आर्थिक दोनों दृष्टिकोण से भारत के लिए उपयुक्त हैं। चूंकि कीमतों को नीचे लाने के लिए स्थानीय अनुसंधान और विकास में निवेश आवश्यक है, इसलिए स्थानीय विश्वविद्यालयों और मौजूदा औद्योगिक केंद्रों का लाभ उठाना उचित है। भारत को यूके जैसे देशों के साथ

काम करना चाहिए और ईवी विकास में तालमेल बिठाना चाहिए।

- जनता को संवेदनशील बनाना: पुराने मानदंडों को तोड़ना और एक नया उपभोक्ता व्यवहार स्थापित करना हमेशा एक चुनौती है। इस प्रकार, कई मिथकों को तोड़ने और भारतीय बाजार में ईवी को बढ़ावा देने के लिए बहुत अधिक संवेदनशीलता और शिक्षा की आवश्यकता है।
- व्यवहार्य बिजली मूल्य निर्धारण: मौजूदा बिजली की कीमतों को देखते हुए, यदि उत्पादन कोयले पर चलने वाले ताप विद्युत संयंत्रों से होता है तो घरेलू चार्जिंग भी एक मुद्दा हो सकता है। इस प्रकार, इलेक्ट्रिक कारों के विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए समग्र रूप से बिजली उत्पादन परिदृश्य में बदलाव आवश्यक है।
- क्लोज्ड-लूप मोबिलिटी इकोसिस्टम का निर्माण: इलेक्ट्रिक सप्लाईचेन के लिए विनिर्माण पर सब्सिडी देने से निश्चित रूप से भारत में ईवी विकास में सुधार होगा। चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ-साथ एक मजबूत सप्लाई चेन की स्थापना की भी जरूरत होगी। इसके अलावा, बैटरी के लिए रीसाइक्लिंग स्टेशनों को विद्युतीकरण में उपयोग की जाने वाली बैटरियों से धातुओं को पुनर्प्राप्त करने की आवश्यकता होगी ताकि इलेक्ट्रिक कारों में बदलाव के लिए आवश्यक बंद-लूप बनाया जा सके जो पर्यावरण के लिए एक अच्छा निर्णय हो।
- लिथियम-आधारित ईवी बैटरियों के सबसे बड़े आपूर्तिकर्ता चीनी और दक्षिण कोरियाई कंपनियां बताई गई हैं। यदि ऐसा है, तो पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक) की जगह लेने के लिए एक नई वैश्विक व्यवस्था उभर रही है। भारत को इस क्रम में अपनी जगह बनाने के लिए योजना बनानी चाहिए - बेहतर चार्जिंग बुनियादी ढांचे, बैटरी बनाने वाली फैक्ट्रियों और कार कंपनियों और उपभोक्ताओं को इलेक्ट्रिक होने के लिए स्मार्ट प्रोत्साहन के साथ।

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि भारतीय राज्य धीरे-धीरे लेकिन लगातार इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहित कर रहे हैं और इसके साथ, हम यात्रा करने की अपनी क्षमता के मामले में एक पूर्ण बदलाव ला सकते हैं। इलेक्ट्रिक वाहन भारतीय परिवहन के लिए आगे का रास्ता हैं, और हमे अब उन पर स्विच करना होगा।

इलेक्ट्रिक वाहनों की चार्जिंग के प्रभाव को कम करने के लिए, भारत वर्ष 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन-आधारित ऊर्जा संसाधनों से लगभग 40 प्रतिशत संचयी विद्युत स्थापित क्षमता हासिल करने का महत्वाकांक्षी है। इलेक्ट्रिक वाहन की क्रांति आ गई है, और आप इसका हिस्सा बन सकते हैं। क्या आपका अगला वाहन इलेक्ट्रिक होगा?

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है
-- महात्मा गांधी

कहानियाँ और किस्से



केसर सिंह

कहानियाँ और किस्से हमारे समाज में गहरे प्रभाव डालने वाले माध्यम हैं। ये हमें मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा, सीखने और समझने का माध्यम प्रदान करते हैं। कहानियों और किस्सों का महत्व और प्रभाव हमारे जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, जो हमारे समाज में नैतिकता, साहित्यिक उत्कृष्टता, और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देते हैं।

कहानियाँ और उनका महत्व:

- शिक्षा का साधन: कहानियाँ हमें विभिन्न विषयों पर शिक्षा प्रदान करती हैं। ये हमें नैतिक मूल्यों, सामाजिक जागरूकता, और विज्ञानिक अद्यात्म के बारे में ज्ञान प्रदान करती हैं। बच्चों में खासकर कहानियों के माध्यम से नैतिकता और सही व्यवहार की सीख सक्षम होती है।
- समाजिक संदेश: कहानियाँ विभिन्न समाजिक मुद्दों को उठाती हैं और समाज में सुधार के लिए प्रेरित करती हैं। वे जाति-धर्म, लैंगिक समानता, सामाजिक अन्याय, विवाह आदि जैसे मुद्दों पर सोचने के लिए हमें प्रेरित करती हैं।
- मनोरंजन: कहानियाँ हमें मनोरंजन और मस्ती के लिए मजेदार प्रेक्षण और अनुभव प्रदान करती हैं। वे हमें खुशी, हंसी और आनंद के पलों को अनुभव कराती हैं और हमें दुख-सुख के अनुभवों में जोड़ती हैं।
- विभिन्न विचार और परिप्रेक्ष्य: कहानियाँ अनेक विचारों, परिप्रेक्ष्यों, और दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करती हैं। वे विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, और ऐतिहासिक समयों के परिप्रेक्ष्य में लिखी जा सकती हैं।
- संवाद कौशल: कहानियाँ विभिन्न पात्रों के बीच संवाद कौशल को विकसित करती हैं। वे हमें बेहतर संवाद कौशल और संवाद के माध्यम से अभिव्यक्ति करने का साहस प्रदान करती हैं।
- साहित्यिक उत्कृष्टता: कहानियाँ साहित्यिक उत्कृष्टता का प्रमुख स्रोत होती हैं। लेखकों की विविधता, कला, और रचनात्मकता का प्रदर्शन होता है जो हमें उनकी लेखनी की शैली, व्यक्तित्व, और दृष्टिकोण के बारे में सिखाती है।
- आत्म-प्रेरणा: कहानियाँ हमें आत्म-प्रेरणा प्रदान करती हैं। वे हमें विभिन्न पात्रों के जीवन से सिखाती हैं, जो हमें संघर्ष, और समाधान की अद्भुत कहानियाँ प्रस्तुत करती हैं।

किस्सों का महत्व:

- ऐतिहासिक महत्व: किस्से विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं, युद्धों, और महान पुरुषों के बारे में हमें बताते हैं। ये हमें इतिहास की भूमिका और विभिन्न समय के सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक परिवेश को समझने में मदद करते हैं।
- धार्मिक महत्व: किस्से धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व की शिक्षा प्रदान करते हैं। धर्मग्रंथों के अनुसार कहानियाँ हमें नैतिकता, धर्म, और आध्यात्मिकता के महत्वपूर्ण सिद्धांतों को समझने में मदद करती हैं।
- लोक-कथाएँ: किस्से विभिन्न लोक-कथाओं, लोकप्रिय कथाओं, और लोकगाथाओं के माध्यम से लोक संस्कृति का बचाव करते हैं और प्रस्तुत करते हैं। ये विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, और क्षेत्रों की विविधता को दर्शाते हैं।
- मनोरंजन: किस्से हमें मनोरंजन के साथ-साथ सोचने का भी मौका प्रदान करते हैं। वे हमें भविष्यवाणियाँ, पहेलियाँ, और रहस्य को सुलझाने के लिए प्रेरित करते हैं।
- सीखना और प्रेरणा: किस्से हमें विभिन्न विषयों के बारे में सीखने और प्रेरित करने की क्षमता प्रदान करते हैं। वे हमें सही और गलत के बीच अंतर को समझने, और अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए प्रेरित करते हैं।

समाप्ति:

- कहानियाँ और किस्से हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो हमें सिखाने, समझाने, और समृद्धि की दिशा में ले जाते हैं। इन्हें पढ़ना और सुनना हमें नए विचार, नई संभावनाओं और नए सपनों के लिए प्रेरित करता है। इसलिए, हमें अपने जीवन में कहानियों और किस्सों को स्थान देना चाहिए, ताकि हम समृद्ध और संतुलित जीवन जी सकें।

सरकारी कार्यालयों में हिंदी भाषा का महत्व



प्रमोद वर्मा

हिंदी भाषा भारतीय सभ्यता का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह हमारी भूमि की सांस्कृतिक धरोहर को प्रतिष्ठित करती है और हमें हमारी विरासत की अद्वितीयता को महसूस कराती है। हिंदी भाषा के साथ-साथ भारत की अनेक भाषाएँ जुड़ी हुई हैं, जिससे हमारे देश की भौगोलिक विविधता और भी समृद्ध हुई है। हिंदी भाषा का महत्त्व अपनी व्यापकता और सरलता में है। यह भारत की राजभाषा है और सरकारी काम-काज में इसका प्रयोग किया जाता है। यह देशवासियों के बीच एकता और समता का प्रतीक है और लोगों को अपनी भाषा में संवाद करने का अधिकार प्रदान करती है। हिंदी की समृद्धि के लिए कवियों और लेखकों ने उनके योगदान के माध्यम से बहुत कुछ किया है। हिंदी साहित्य विश्व में अपनी विशेषता के लिए मान्यता प्राप्त है और हमारी साहित्यिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। समाज में शिक्षा, व्यावसायिक क्षेत्र, संगठनों में काम, और सरकारी विभागों में भी हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है।

हिंदी भाषा का इतिहास विशाल और समृद्ध है। यह भारत की राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है और इसका विकास विभिन्न युगों में हुआ है। प्राचीन काल में, हिंदी का निर्माण संस्कृत भाषा के विकास के साथ हुआ। वेदों, उपनिषदों, और पुराणों में संस्कृत के साथ हिंदी के प्रारंभिक रूपों का परिचय होता है। मध्यकालीन काल में, हिंदी के विकास के साथ भारतीय साहित्य का उदय हुआ। भारतीय कवियों और संतों ने हिंदी भाषा में अपने ग्रंथों और भजनों का रचनात्मक कार्य किया। मुग़ल साम्राज्य के आगमन के साथ, हिंदी का विकास और ग्रामीण क्षेत्रों में हिंदी के प्रचलन में वृद्धि हुई। मुगल शासकों के समय में, हिंदी भाषा का उपयोग लोकप्रिय हुआ और इसने भारतीय समाज के भाषाई और सांस्कृतिक अनुसंधान को प्रेरित किया। ब्रिटिश शासन के दौरान, हिंदी भाषा को प्रोत्साहित किया गया और इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया। अनेक शिक्षा संस्थानों में हिंदी की पढ़ाई को महत्वपूर्ण बनाया गया और साहित्यिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया गया। स्वतंत्रता के बाद, हिंदी भाषा को भारत के राष्ट्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। हिंदी और अंग्रेजी दोनों को भारतीय संविधान में राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई है। आज, हिंदी भाषा भारत की विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक रूप से उपयोग की जा रही है। यह सरकारी कामकाज, शिक्षा, व्यावसायिक संचार, साहित्य, और कला के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

हिंदी भाषा के कई प्रसिद्ध कवि और लेखक हैं, जिनके साहित्यिक योगदान ने हिंदी भाषा को गौरवान्वित किया है। उनकी रचनाएँ हिंदी भाषा के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च स्थान प्राप्त कर चुकी हैं और उनका कार्य आज भी हमें प्रेरित करता है। कुछ प्रमुख हिंदी कवि और लेखकों **महाकवि मुंशी प्रेमचंद, महाकवि गोस्वामी तुलसीदास, महाकवि भारतेन्दु हरिश्चंद्र, महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'**, जगदीशचंद्र माथुर **जो** भारतीय साहित्य के महान कवि थे। उनकी कहानियाँ, उपन्यास और नाटकों में समाज के मुद्दों पर गहरा प्रभाव दिखाई दिया। इन कवियों और लेखकों के साहित्यिक योगदान को समझना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनकी रचनाएँ हमें आत्म-परिचय, समाजिक समस्याओं को समझने में और उनके समाधान की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

भारतीय संविधान एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है जो हमारे देश के संवैधानिक और कानूनी नियमों को स्थापित करता है। संविधान हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में है। यह भारतीय समाज की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता को मानता है और हमारी राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी को महत्वपूर्ण स्थान देता है।

संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में प्रामाणिकता दी गई है। इसके अनुसार, हिंदी को राजभाषा के रूप में सभी सरकारी कामकाज में उपयोग किया जाना चाहिए, लेकिन अन्य भाषाओं का प्रयोग भी उनके अधिकारों के तहत किया जा सकता है। संविधान में हिंदी को राज्य और केंद्र सरकारों की आधिकारिक भाषा के

रूप में भी प्रामाणिकता दी गई है। इससे हिंदी के उपयोग को बढ़ावा मिलता है और लोगों को अपनी भाषा में सरकारी संवाद करने का अधिकार मिलता है।

संविधान में हिंदी की भूमिका को मजबूत करने के लिए, संविधान ने हिंदी के विकास के लिए सामाजिक और आर्थिक रूप से समर्थन प्रदान किया है। इसके अलावा, हिंदी की शिक्षा को भी महत्व दिया गया है और संविधान ने उसके विकास के लिए उपायों को प्राथमिकता दी है।

हिंदी भाषा सरकारी कार्यालयों में प्रभावी संचार, प्रशासनिक दक्षता और राष्ट्रीय एकता के लिए एक साधन के रूप में काम करती है। सरकारी कार्यालयों में हिंदी भाषा का प्रयोग महत्वपूर्ण और आवश्यक है, विशेष रूप से सरकारी कार्यालयों में जहां प्रभावी सरकारी निर्धारण और सार्वजनिक सेवा प्रदान के लिए यथार्थ संचार की आवश्यकता होती है। भारत के विविध भाषाई मंच पर, हिंदी एक एकता की शक्ति के रूप में प्रकट होती है और विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के बीच संचार के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सरकारी कार्यालयों में हिंदी भाषा राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों और जनसमूहों के बीच संवाद को सरल बनाती है जिससे सरकारी निर्धारण को संबोधित किया जा सके और जनता को सही तरीके से सेवा प्रदान की जा सके। हिंदी भारतीय सरकार की आधिकारिक भाषा के रूप में काम करती है। संवैधानिक प्रावधान ने सरकारी कार्यालयों के कार्य करने में हिंदी का आधारभूत महत्व बताया है, जो केंद्रीय और राज्य स्तर पर दोनों में संचालित होता है। हिंदी को संवैधानिक स्तर पर स्वीकृति देने से सरकारी प्रलेखन की एकता और विनिमय को बढ़ावा मिलता है, जिससे कि कानून, नीतियों और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को समझना और व्याख्या करना सरल होता है। इसके अलावा, हिंदी का भारतीय जनता के बीच व्यापक प्रसार और दक्षता का लाभ लिया जाता है। भारत की जनगणना के अनुसार, हिंदी बड़ी संख्या में भारतीयों की मातृभाषा है और अधिक से अधिक लोगों द्वारा पहली या दूसरी भाषा के रूप में बोली जाती है। इसकी व्यापक पहुंच के कारण, हिंदी को सरकारी कार्यालयों में अपनाने से भारतीय जनता को सरकारी सेवाओं और जानकारी का अधिक सुगमता से लाभ मिलता है, विशेष रूप से वे लोग जो हिंदी बोलने वाले क्षेत्रों में रहते हैं। हिंदी भाषा सरकारी कार्यालयों में प्रभावी संचार, प्रशासनिक दक्षता, और राष्ट्रीय एकता के लिए एक साधन के रूप में काम करती है। हिंदी का सरकारी कार्यालयों में उपयोग सांस्कृतिक और भाषाई महत्व को बढ़ावा देता है और साथ ही राष्ट्रीय एकता और समता को बढ़ावा देता है और वे लोग जो हिंदी को अपनी पहली भाषा के रूप में नहीं बोलते हैं, वे नुकसान या अलगाव का सामना नहीं करें। द्विभाषिकता, बहुभाषिकता, और अनुवाद सेवाओं का प्रदान भाषाई बाधाओं को तटस्थ करने में मदद कर सकता है और सरकारी संवाद में समावेशितता को प्रोत्साहित कर सकता है।

सरकारी कार्यालयों में हिंदी भाषा के उपयोग में कुछ क्षेत्रों में कठिनाईयाँ भी होती हैं। इन कठिनाईयों को समझना और समाधान करना आवश्यक है ताकि हिंदी के प्रयोग को सुविधाजनक बनाया जा सके। कुछ सरकारी कार्यालयों में हिंदी का अभाव है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां यह भाषा प्रमुख भाषा नहीं है, कुछ कर्मचारियों को हिंदी पढ़ने एवं समझने का अभाव है, इसलिए वो सरकारी काम-काजो में दूसरी भाषा का प्रयोग करते है, इस समस्या का समाधान करने एवं हिंदी के प्रोत्साहन के लिए सरकारी कदमों के तहत हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने और लोगों को इसके प्रति प्रेरित करने के लिए:

- अनुवाद सेवाओं का प्रयोग करना : अनुवाद सेवाएं विभिन्न भाषाओं के लोगों को हिंदी साहित्य, निर्देशिकाएं, नोटिस आदि को उनकी भाषा में अनुवादित करके प्रदान करती हैं।
- शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यवस्था करना: सरकारी कार्यालयों में हिंदी शिक्षा और प्रशिक्षण का प्रावधान किया जाता है। इसके लिए सरकार द्वारा हिंदी को लेकर विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम और संचालनिक प्रणालियों की व्यवस्था की जाती है ताकि कर्मचारियों को हिंदी का संचार करने की क्षमता प्राप्त हो।,
- हिंदी में साक्षात्कार और संवाद: सरकारी कार्यालयों में अधिक से अधिक हिंदी में साक्षात्कार और संवाद किए जाते हैं। इससे कर्मचारियों को हिंदी में संवाद करने का अवसर मिलता है और उन्हें हिंदी में व्यावसायिक कौशल विकसित करने में मदद मिलती है।

- संगठनों और सरकारी नीतियों को बढ़ावा देना: सरकारी नीतियों की कुछ मुख्य नीतियों में राजभाषा कार्यक्रम, राजभाषा विभाग, राजभाषा संशोधन, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नीति है।
- राजभाषा कार्यक्रम : भारतीय सरकार द्वारा राजभाषा कार्यक्रम की योजना के अंतर्गत हिंदी का प्रयोग करने वाले कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम और संगठित सत्र आयोजित किए जाते हैं।
- राजभाषा विभाग : राजभाषा विभाग का मुख्य कार्य है हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना और सरकारी कार्यालयों में इसका विकास करना। इस विभाग के अंतर्गत विभिन्न योजनाएं चलाई जाती हैं जैसे कि हिंदी दिवस के उत्सव, हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन, और हिंदी भाषा से संबंधित अन्य कार्यक्रम।
- राजभाषा संशोधन : सरकारी नीतियों और दस्तावेजों को हिंदी में संशोधित करने का प्रयास किया जाता है ताकि कर्मचारियों को हिंदी में संदेश प्राप्त हो सके और उनको समझने में आसानी हो।
- राजभाषा अधिनियम : राजभाषा अधिनियम के अंतर्गत, सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाती है। यह कानून सभी सरकारी कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करता है और संवैधानिक रूप से हिंदी को सरकारी कार्यालयों में महत्वपूर्ण बनाता है।
- राजभाषा नीति : सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को सुधारने के लिए एक विशेष राजभाषा नीति तैयार की जाती है। इस नीति के अनुसार, हर सरकारी कर्मचारी को हिंदी में काम करने का आदेश दिया जाता है और समय-समय पर उन्हें हिंदी के प्रयोग की परीक्षा भी दी जाती है।
- साहित्यिक संस्थानों का सहयोग लेना: सरकारी कार्यालयों में ये संस्थान तकनीकी और प्राविधिक सहायता प्रदान कर सकते हैं ताकि सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को सुविधाजनक बनाया जा सके।
- विभिन्न संचार माध्यमों का प्रयोग बढ़ाना: हिंदी भाषा के प्रोत्साहन और विकास के लिए विभिन्न प्रोग्राम और योजनाएं चलाई जाती हैं ताकि सरकारी कर्मचारी हिंदी भाषा के प्रयोग में आने वाली कठिनाई का सामना कर सकें। हिंदी में संवाद की गई वेबसाइटों, ई-मेल संचार, हिंदी पत्र-पत्रिकाएं आदि शामिल भी हैं। ये सभी माध्यम सरकारी कर्मचारियों को हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें सहायता प्रदान करते हैं।

इन सभी कदमों के माध्यम से, सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए सरकार ने कई पहल की हैं। ये पहलें हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देती हैं और सरकारी कार्यालयों में समर्थ और प्रभावी रूप से हिंदी का प्रयोग होने में मदद करती हैं।

सरकारी कार्यालयों में हिंदी क्षेत्रों में कुछ प्रमुख क्षेत्र हैं :

- आधिकारिक संवाद: जो कि सरकारी कार्यालयों में हिंदी क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है, सभी आधिकारिक पत्र, नोटिस, और अन्य संदेश हिंदी में लिखे जाते हैं ताकि सभी नागरिक हिंदी में संदेश को समझ सकें।
- कानूनी दस्तावेज: जो कि हिंदी क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र कानूनी दस्तावेज हैं। सरकारी कार्यालयों में अधिकांश कानूनी दस्तावेज हिंदी में उपलब्ध होते हैं ताकि लोग अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझ सकें।
- प्रतिवेदन और अनुसंधान: जो कि सरकारी कार्यालयों में हिंदी के क्षेत्र में रिसर्च और प्रतिवेदन भी शामिल हैं। विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन और अनुसंधान के लिए प्रतिवेदन हिंदी में तैयार किए जाते हैं और इससे लोगों को आवश्यक जानकारी प्राप्त होती है।
- प्रशासनिक कार्य: जो कि सरकारी कार्यालयों में सभी प्रशासनिक कार्य जैसे कि अनुमतियों का इस्तेमाल, वित्तीय लेन-देन, और कर्मचारी कार्यालय संबंधित कार्य हिंदी में प्रदान किए जाते हैं।
- संवाद: जो कि सरकारी कार्यालयों में हिंदी क्षेत्र में संवाद भी महत्वपूर्ण है। कर्मचारियों के बीच के संवाद और स्थानीय लोगों के साथ संवाद हिंदी में किया जाता है।

ये सभी क्षेत्र सरकारी कार्यालयों में हिंदी के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इसे एक सुविधाजनक भाषा बनाते हैं। इन क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करता है कि सरकारी सेवाओं को लोगों तक सही और समय पर पहुंचाया जा सके। हिंदी भाषा हमारे राष्ट्रीय और सांस्कृतिक आधार का अभिन्न हिस्सा है और यह हमारी पहचान का एक महत्वपूर्ण अंग है

जो हमें हमेशा गर्व करने के लिए प्रेरित करता है। आधुनिक तकनीकी उपकरणों के प्रयोग की अभिव्यक्ति भी हिंदी में होनी चाहिए ताकि हमारी भाषा को नए युग में भी मजबूती से निभाया जा सके। हिंदी को आधिकारिक वार्तालाप के माध्यम के रूप में अपनाने से, सरकारी एजेंसियाँ पहुंच, समावेशितता, और ऑपरेशनल दक्षता में सुधार कर सकती हैं, जिससे कि वे अपनी जिम्मेदारियों को अधिक सटीकता और गति के साथ पूरा कर सकें। फिर भी, हिंदी के प्रोत्साहन को भाषाई विविधता और भाषाई अल्पसंख्यकों के अधिकारों के साथ संतुलित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी नागरिक एक भाषा में सरकार से संबोधित हो सकें और उसमें शामिल हो सकें।

हिंदी सभी भाषाओं के संगम की भाषा है और भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक अस्तित्व का महत्वपूर्ण हिस्सा है। हिंदी का सरकारी कार्यालयों में बढ़ता हुआ उपयोग प्रत्येक कर्मचारी को भारतीय संविधान और भारतीय संस्कृति के प्रति गहरी आस्था का परिचय कराएगा । सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने से राष्ट्रीय एकता और एकजुटता को बढ़ावा मिलेगा। हमें ध्यान देना चाहिए कि हिंदी को सरकारी कार्यालयों में प्रयोग करना भारत की विविधता और समृद्धि का प्रतीक है। हिंदी को सरकारी कार्यालयों में भविष्य में अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए। इससे भारतीय संविधान के मूल्यों को भी प्रकट करने का मौका मिलेगा। इसलिए, हमें हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए समर्थन करना चाहिए ताकि हम एकजुट और समृद्ध भारत की दिशा में अग्रसर हो सकें और हिंदी भाषा को एक व्यापक भाषा बनाने में अपना योगदान दे सकें।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है,
वह उन्नत नहीं हो सकता
- डॉ. राजेंद्र प्रसाद

आधुनिक भारत



प्रमोद वर्मा

आधुनिक भारत एक ऐसा भारत है जो विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और सामाजिक विकास की ओर अग्रसर है। स्वतंत्रता के बाद से लेकर आज तक की यात्रा में भारत ने अनेक बड़े-बड़े कदम उठाए हैं। भारत के विकास में कई प्राचीन संस्कृतियों और ऐतिहासिक परंपराओं का योगदान है। भारतीय इतिहास में विकास का मतलब लगातार परिवर्तन और सुधार से है, जो समाज, अर्थव्यवस्था, और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को आधुनिकता की ओर ले जाता है।

आधुनिक भारत का इतिहास:

भारत का इतिहास बहुत गौरवशाली और प्रेरणादायक है। स्वतंत्रता के पहले, भारत एक ब्रिटिश शासित देश था। लेकिन 15 अगस्त 1947 को, भारत ने ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतंत्रता प्राप्त की। यह एक महत्वपूर्ण घटना थी जो भारतीय जनता के लिए एक नई आशा का संदेश लेकर आई। स्वतंत्रता के बाद, भारत ने एक नयी पहचान बनाने का संकल्प किया। भारत के संविधान का निर्माण भी एक महत्वपूर्ण कदम था, जिसने देश को एक लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। संविधान के अनुसार, भारत एक संवैधानिक लोकतंत्र है जहां राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की भूमिका होती है।

आधुनिक भारत के विकास का इतिहास:

आधुनिक भारत के विकास का इतिहास विशाल और उत्कृष्ट है, जिसमें अनेक कारणों और प्रक्रियाओं का संयोजन शामिल है। भारत का विकसित होना एक लंबी यात्रा है, जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ-साथ अन्याय, गरीबी, और विभिन्न समस्याओं का सामना करती रही है। कुछ महत्वपूर्ण घटनाक्रम और प्रक्रियाएं जो आधुनिक भारत के विकास के महत्वपूर्ण हैं:

- **स्वतंत्रता संग्राम:** भारत के विकास की शुरुआत में स्वतंत्रता संग्राम एक महत्वपूर्ण क्रोनोलॉजिकल प्रक्रिया थी। इसके द्वारा भारतीय जनता ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई लड़ी और स्वतंत्रता प्राप्त की। स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं के संघर्ष और जनसंघर्ष ने एक नए भारत की आधुनिक नींव रखी।
- **संविधान निर्माण:** स्वतंत्रता के बाद भारत ने अपना संविधान निर्मित किया, जो एक लोकतांत्रिक राजनीति की आधारशिला रखता है। भारतीय संविधान में नागरिकों के मौलिक अधिकारों की सुरक्षा, सरकारी प्रणाली का विवरण और संविधान संशोधन की प्रक्रिया का विवरण है।
- **पंचवर्षीय योजना:** भारत में विकास के लिए पहली पंचवर्षीय योजना 1951 में लागू की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रबल करना और गरीबी की समस्या को हल करना था।
- **उद्योगीकरण:** स्वतंत्रता के बाद भारत ने उद्योगीकरण के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत किया। पहली पंचवर्षीय योजना में उद्योगीकरण को एक प्राथमिकता माना गया था।
- **उदारीकरण की प्रक्रिया:** 1991 में भारत ने आर्थिक नीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन किया और उदारीकरण की प्रक्रिया को आरंभ किया। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था में बड़े परिवर्तन आए और अर्थव्यवस्था में तेजी से विकास हुआ।
- **बाहरी निवेश:** भारत में विदेशी निवेश की प्रक्रिया ने भी देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह निवेश नई और विशेषज्ञतापूर्ण तकनीकों का प्रयोग करता है और भारत की अर्थव्यवस्था को विविध करता है।
- **सामाजिक परिवर्तन:** भारतीय समाज में भी कई परिवर्तन हुए हैं, जिसमें महिलाओं के अधिकारों में सुधार, गरीबी का खात्मा और अशिक्षितता का समापन शामिल है।

इन प्रमुख प्रक्रियाओं और घटनाओं के माध्यम से भारत ने आधुनिक और विकसित राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बनाई है। इस प्रकार आधुनिक भारत का विकास एक बहुत ही महत्वपूर्ण और उत्कृष्ट इतिहास है जो भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयों तक ले जा रहा है।

आधुनिक भारत के प्रमुख क्षेत्र:

- **विज्ञान और प्रौद्योगिकी:** स्वतंत्रता के बाद भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में बहुत तेजी से विकास किया है। इसके परिणामस्वरूप भारत अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक प्रमुख तकनीकी शक्ति बन चुका है। भारत ने अंतरिक्ष और अन्य विज्ञान क्षेत्रों में विशेष उपलब्धियाँ हासिल की हैं। इसमें भारत का मंगलयान और अन्य अंतरिक्ष मिशन भी शामिल हैं।
- **शिक्षा क्षेत्र में सुधार:** आधुनिक भारत में शिक्षा की स्थिति में भी सुधार हुआ है। सरकार ने शिक्षा क्षेत्र में अनेक योजनाओं को शुरू किया है, जिससे गरीब और पिछड़े वर्ग के लोगों को उच्च शिक्षा का लाभ मिल सके।
- **आर्थिक विकास:** भारत की आर्थिक वृद्धि भी विश्व को आश्चर्यचकित करती है। भारत एक विश्वासी अर्थव्यवस्था बन चुका है और अब दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।
- **सामाजिक विकास:** भारतीय समाज में भी कई बदलाव हुए हैं। महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए भी कई कदम उठाए गए हैं। महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में मुक्तता और समानता के अवसर प्रदान किए गए हैं। भारत में सामाजिक विकास भी तेजी से हो रहा है। गरीबी की समस्या को हल करने के लिए कई सरकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं।
- **सांस्कृतिक विकास:** भारत की सांस्कृतिक विरासत भी अत्यंत समृद्ध है। यहाँ भारतीय कला, संगीत, नृत्य, और शिल्पकला जैसी विविधताओं को समेटा जाता है।

आधुनिक भारत एक ऐसा भारत है जो विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और सामाजिक विकास की ओर अग्रसर है। आज, भारत एक विश्व शक्ति के रूप में अपनी पहचान बना चुका है और उसका भविष्य और भी उज्ज्वल है।

हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है
- महात्मा गांधी

कार्यालयीन गतिविधियाँ









कार्यालयीन गतिविधियाँ









कार्यालयीन गतिविधियाँ









कार्यालयीन गतिविधियाँ



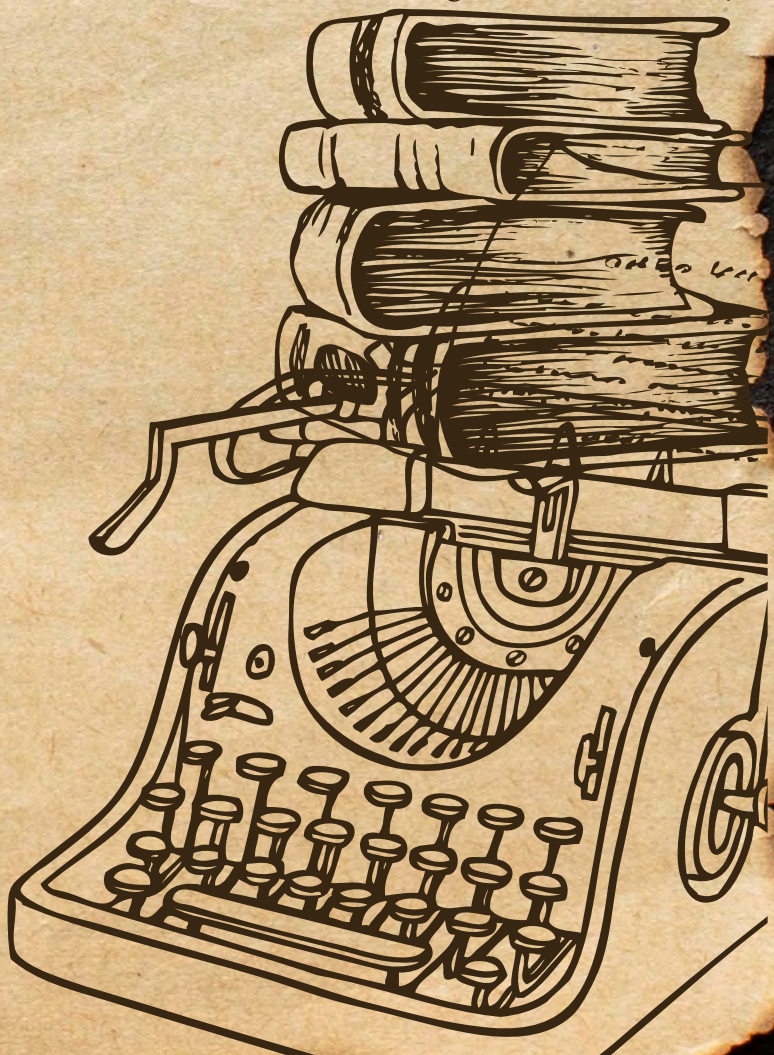






कविता





जीवन : एक रण



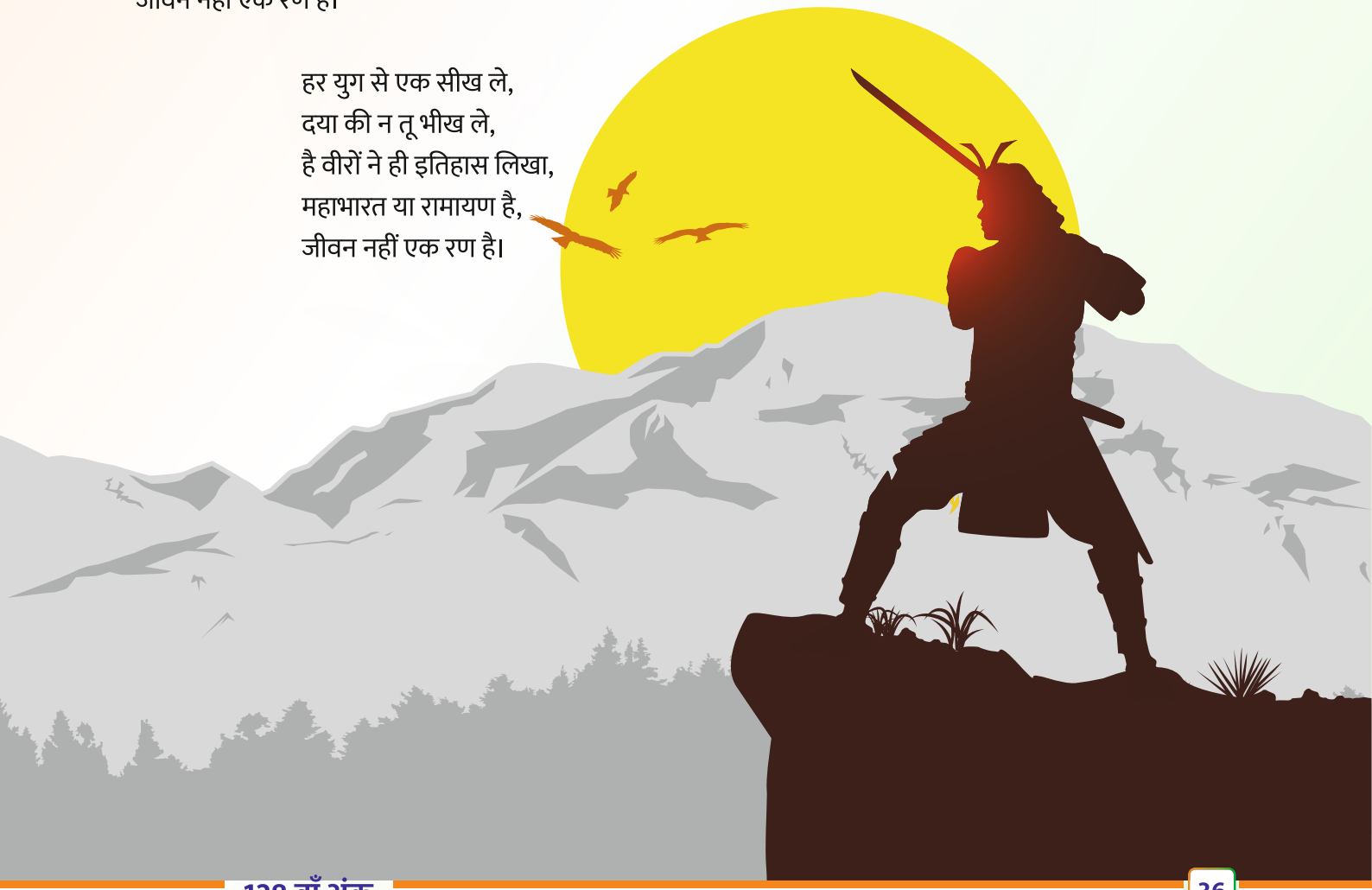
हनिका शर्मा

जीवन नहीं एक रण है,
यही भाव हर एक क्षण है।
है जीवित वही जो योद्धा है,
शेष तो मरण है।

इस रण में तू भागी बन,
इच्छाओं का त्यागी बन,
दुनिया से बैरागी बन,
फिर देख जो दर्पण है,
जीवन नहीं एक रण है।

हो जीत तो फिर से जुट,
हो हार तो फिर से उठ,
कर निश्चय और न रुक,
यही तेरा समर्पण है,
जीवन नहीं एक रण है।

हर युग से एक सीख ले,
दया की न तू भीख ले,
है वीरों ने ही इतिहास लिखा,
महाभारत या रामायण है,
जीवन नहीं एक रण है।



सफ़र



जीशान खान

सफ़र में मुसाफिर की आँखें तलाशती हैं किसको,
शायद घर था उसका वहां, जहाँ जाना था उसको।

बड़ा कुछ सिखाया सफ़र ने,
कुछ भी मुकम्मल नहीं इस जहाँ में, ये समझाया सफ़र ने।

यूं ही एक पहर से दूसरे पहर तक कटा सफ़र में,
आखिर मिल ही जायेगी मंजिल, ये सिखाया सफ़र ने।

कभी जंगल तो कभी आबाद बस्तियों से गुजर हुआ,
बड़े खुश थे वो बच्चे, जो खेल रहे थे घर के आँगन में,
घर के आँगन की जरूरत याद दिलाई सफर ने।

सामान बेचने वालों से मुलाकात हुई सफ़र में,
कागज़ के नोट कमाना है नहीं आसान, ये मैंने देखा सफ़र में।

लोगों की नई-नई बातों और तजुर्बों को सुना है सफ़र में,
ज़िदगी को देखने का एक नया नजरिया सिखाया है सफ़र ने।

कुछ अपने, कुछ पराये शहरों से निकलना हुआ,
सोचते रहे कि आखिर इन शहरों में क्यों आना हुआ।

यही ज़िन्दगी की रीत है, ये बतलाया सफ़र ने,
सफ़र पूरा हुआ तो पाया अपनों को,

है सफ़र भी खूबसुरत ये घरवालों से मिलकर समझ आया हमें।

ये ख़ुशी भी जल्द पूरी हो जाएगी,
क्योंकि नए सफ़र के लिए तैयार रहना सिखाया सफ़र ने।

सफ़र उतना ही जरुरी है, जितनी मंजिल,
ये एहसास भी कराया सफ़र ने।



पिता



अंकित कुमार

और फिर एक दिन पता लगता है
पिता के साहसी कंधे अब थकने लगे हैं।
त्वचा जो मुलायम थी उसमें स्याह झुर्रियां
अब दूर से भी दिख जाती हैं।
उनके माथे पर लकीरों की
तीन-चार पगडंडियां उभरी हुई हैं,
जो उम्र के पड़ाव में गिरते-पड़ते
अब मेरियाना ट्रेंच गर्त से भी गहरी
और सख्त दिखाई पड़ती हैं।

हालांकि वो यूं ही बयां नहीं करते
ये उम्र का असर जो अब उन पर ठहर रहा है,
लेकिन जब कभी बैठता हूं उनके पास
तो भांप जाता हूं उनके हावभाव से
शायद उनका अंश हूं इसलिए
और साथ ही ईश्वर को
धन्यवाद ज्ञापित कर देता हूं
मन ही मन कि ये सब
समझने का गुण उन्होंने
मुझमें कहीं अंदर तक भर दिया है।
इसी बीच नजरें चुराके देख लेता हूं
कि उनका दौड़ता भागता शरीर
अब सर झुका कर कई देर तक
एक ही मुद्रा में कुछ चिंतन
सा करता दिखाई पड़ता है।



ऐसा लगता है मानो इस उम्र में भी
उनका दिल भरा नहीं है
जिम्मेदारियों का बोझा ढोते ढोते,
वो परेशान हैं ढलती उम्र
के बोझ से जो अदृश्य रूप से
उनकी आत्मा की ऊर्जा को सोख रहा है।
इन्हीं चीजों को महसूस करते करते
कलेजा फटने को हो जाता है
और नहीं देखा जाता माता-पिता
को यूं बुढ़ापे की दहलीज पार करते हुए।

नदिया



केसर सिंह

कौन है वह जो आँखों में बस गई,
नदिया की धारा जैसी चल गई।

वह है नदिया, जो बहती रही,
जीवन के संगीन को भी बहती रही।

उसकी लहरों में छुपा है जीवन का गान,
सबको आपकी ओर ले जाती रही आसान।

संघर्षों में भी वह नहीं थमी,
हर रोज नए सपने वह सजाती रही।

नदिया की धारा जैसी है वह,
अपने सपनों की ओर बढ़ती रही।

वह है नादिया, जो बहती रही,
जीवन के संगीन को भी बहती रही।

मामा



मनीष कुमार

दो मांओं का रुप तुम
सर्दी में निकलती धूप तुम
मुझ प्यासे का कूप तुम
तुम मेरे कान्हा हो
आब-ए-चश्म पीएं नीर समझकर
ऐसे तुम मेरे मामा हो...

कब्र करीब़ थी
म़ौत इतंजार में सूख रही
बचपन में पताशों का पानी
भीगे चावल से कटी जिंदगानी
तुम मेरे सुदामा हो
गले से मैं लटकता पेड़ समझकर
ऐसे तुम मेरे मामा हो...

पैर तेरे, सैर मेरी
किस्से तेरे, आज कलम मेरी
दो रुपये जो दिए बचपन में
कीमत इतनी कि खरीद लिया जमाना हो
मुकाम-मकां सब मिला तुम्हें ता'स्सुब समझकर
ऐसे तुम मेरे मामा हो...

भाई-सखा हर रिश्ते का प्यार मिला
जो देखा तुझमें वो किरद़ार मिला
देखूं तुम्हें तो किताब से कम नहीं
मिले अगर तो ख़िताब से कम नहीं
चलूं आज भी सफ़र की उम्दा खबर समझकर
ऐसे तुम मेरे मामा हो...



कार्यालय समाचार

खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियाँ

1. श्री कशिश (लेखाकार), बैडमिंटन खिलाड़ी ने दिनांक 12-04-2023 से 18-04-2023 तक बहादुरगढ़ , हरियाणा में बैडमिंटन एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया द्वारा आयोजित सीनियर रैंकिंग बैडमिंटन प्रतियोगिता में भाग लिया।
2. श्री अर्पित कौशिक (वरिष्ठ लेखाकार), क्रिकेट खिलाड़ी ने प्रधान रक्षा लेखापरीक्षा विभाग , अहमदाबाद में गुरुकुल प्रीमियर लीग (जी.पी.एल.)-12 में भाग लेने के लिए ट्रायल कैंप में 24-04-2023 से 29-04-2023 तक भाग लिया।
3. श्री राहुल मल्होत्रा (वरिष्ठ लेखाकार), टेबल टेनिस खिलाड़ी ने 24-04-2023 से 30-04-2023 तक जालंधर में आयोजित 29 वीं नेशनल मास्टर टेबल टेनिस चैंपियनशिप -2022 में टेक्निकल ऑफिशल के रूप में भाग लिया।
4. श्री जसवीर अंतिल, लेखाकार एवं श्री परविंदर सिंह, लेखाकार हॉकी खिलाड़ियों ने 18-05-2023 से 28-05-2023 तक कोविलपट्टी (तमिलनाडु) में आयोजित लक्ष्मी अम्मा मेमोरियल 12 वीं अखिल भारतीय हॉकी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए 08-05-2023 से 16-05-2023 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) तमिलनाडु द्वारा मदुरै में आयोजित चयन सह कोचिंग कैंप में भाग लिया।
5. निम्नलिखित हॉकी खिलाड़ियों ने नैनीताल में 12 जून 2023 से 15 जून 2023 तक चयन ट्रायल सह कोचिंग शिविर में भाग लिया।

क्रमांक	खिलाड़ी का नाम (श्री)	पद	अनुभाग
1	जगरूप सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	कलम-18
2	ध्यान सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	सीआरटी-द्वितीय
3	रनजोध सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	पीआरसी-द्वितीय
4	परविंदर सिंह	लेखाकार	संकलन-UT.
5	जसबीर अंतिल	लेखाकार	सी-I

6. क्रिकेट खिलाड़ी श्री अंकित कौशिक, वरिष्ठ लेखाकार ने 20 जून 2023 से 22 जून 2023 तक चंडीगढ़ में आयोजित घरेलू क्रिकेट लीग के लिए चंडीगढ़ सीनियर पुरुष क्रिकेट टीम में भाग लिया।
7. श्री अर्पित सिंह, लेखाकार और श्री अंकित कौशिक, वरिष्ठ लेखाकार क्रिकेट खिलाड़ियों ने 6 जून 2023 से 8 जून 2023 और 15 जून 2023 से 17 जून 2023 और 11 जून 2023 से 13 जून 2023 और 15 जून 2023 से 17 जून 2023 तक चंडीगढ़ में आयोजित घरेलू क्रिकेट लीग के लिए चंडीगढ़ सीनियर पुरुष क्रिकेट टीम में भाग लिया।
8. श्री कशिश, लेखाकार बैडमिंटन खिलाड़ी ने 26 जून 2023 से 2 जुलाई 2023 तक और 3 जुलाई 2023 से 9 जुलाई 2023 तक क्रमशः पुणे, महाराष्ट्र और हैदराबाद में आयोजित होने वाले सीनियर रैंकिंग-बैडमिंटन टूर्नामेंट में भाग लिया।
9. निम्नलिखित खिलाड़ियों ने 94 वें ऑल इंडिया एम सी सी- मुरुगप्पागोल्ड कप हॉकी टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए दिल्ली में सिलेक्शन कम ट्रायल कैंप में भाग लिया।

क्रमांक	खिलाड़ी का नाम (श्री)	पदनाम	समय
1	जसबीर अंतिल	लेखाकार	09-08-2023 से 14-08-2023 तक
2	जगरूप सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	07-08-2023 से 18-08-2023 तक

10. हॉकी खिलाड़ी श्री परविंदर सिंह ने दिनांक 07-08-2023 से 21-08-2023 तक 94 वें ऑल इंडिया एम सी सी- मुरुगप्पागोल्ड कप हॉकी टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए दिल्ली में सिलेक्शन कम ट्रायल कैंप में भाग लिया तथा दिनांक 24-08-2023 से 03-09-2023 तक तक 94 वें ऑल इंडिया एम सी सी-मुरुगप्पागोल्ड कप हॉकी टूर्नामेंट (चेन्नई) में भाग लेने गया।
11. श्री राहुल मल्होत्रा, वरिष्ठ लेखाकार टेबल टेनिस खिलाड़ी ने दिनांक 16-08-2023 से 22-08-2023 तक विशाखापट्टनम में आयोजित 50 वीं ऑल इंडिया इंटर इंस्टीट्यूश्नल टेबल टेनिस चैंपियनशिप 2023 में भाग लिया।

अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति

(01-04-2023 से 30-09-2023)

क्र. सं.	सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पद श्री/श्रीमती	सेवानिवृत्ति की तिथि	टिप्पणी
1	तरसेम सिंह, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30-04-2023	--
2	जवाहर लाल शर्मा, पर्यवेक्षक	30-04-2023	--
3	तारा रानी, पर्यवेक्षक	30-04-2023	--
4	हरबंस सिंह, एम.टी.एस.	24-04-2023	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति
5	प्रमोद कुमार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31-05-2023	--
6	रंजू महाजन, पर्यवेक्षक	31-05-2023	--
7	बलजीत कौर, सहायक पर्यवेक्षक	31-05-2023	--
8	मघर सिंह, एम.टी.एस.	31-05-2023	--
9	हरि दास, पर्यवेक्षक	30-06-2023	--
10	मधु बाला सैनी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31-07-2023	--
11	सुनीता कुमारी, सहायक लेखा अधिकारी	31-07-2023	--
12	अनीता घई, सहायक पर्यवेक्षक	31-07-2023	--
13	प्रेम लता, सहायक पर्यवेक्षक	10-08-2023	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति
14	गुरविंदर कौर, सहायक लेखा अधिकारी	31-08-2023	--
15	संगीता सैनी, सहायक लेखा अधिकारी	31-08-2023	--
16	लक्ष्मी साहा, पर्यवेक्षक	31-08-2023	--
17	ईश्वर सिंह, सहायक पर्यवेक्षक	31-08-2023	--
18	राज कुमार, एम.टी.एस.	31-08-2023	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

सभी सेवानिवृत्त अग्रज साथियों की दीर्घायु तथा उनके सुखी एवं स्वस्थ सेवानिवृत्त जीवन के लिए "अंकुर" परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

अधिकारियों/कर्मचारियों की नियुक्ति एवं पदोन्नति

(01-04-2023 से 30-09-2023)

क्र. सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पद श्री/श्रीमती	पदोन्नति	तिथि	टिप्पणी
1	वामिका, लेखाकार		11-04-2023	--
2	संजु नेगी, लेखाकार		31-07-2023	--
3	जगदीश जाट, लेखाकार		31-07-2023	–
4	खुशप्रीत कौर, लेखाकार		31-07-2023	--
5	पंकज, लेखाकार		31-07-2023	--
6	सतीश, लेखाकार		31-07-2023	–
7	अभिषेक शुक्ला, लेखाकार		04-08-2023	--
8	प्रिंसी पटेल, लेखाकार		04-08-2023	--
9	शिवानी, लेखाकार		02-08-2023	–
10	ममता, लेखाकार		07-08-2023	--
11	विकास कुमावत, लेखाकार		04-09-2023	--
12	तुषार खंडेलवाल, लेखाकार		08-09-2023	–
13	दिनेश्वर कुमार दुबे, वरि. लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-04-2023	--
14	बलजीत कौर, वरि. लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-04-2023	--
15	सरबजीत सिंह, वरि. लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-04-2023	–
16	अमित काकरिया, वरि. लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-05-2023	--
17	विनीत सेठ, सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	01-04-2023	--
18	परवीन महाजन, सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	01-05-2023	–
19	नरिंदर सिंह, सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	01-05-2023	--
20	सुमन मीना, वरि. लेखाकार	स.ले.अ.	25-05-2023	--
21	बनवारी लाल मीना, लेखाकार	वरि. लेखाकार	05-06-2023	–
22	नीना रानी, वरि. लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	15-06-2023	--
23	राजेश कुमार मीना, लेखाकार	वरि. लेखाकार	15-06-2023	--
24	पायलेट मीना, लेखाकार	वरि. लेखाकार	01-06-2023	–
25	आलोक कांवट, लेखाकार	वरि. लेखाकार	03-07-2023	--
26	राकेश रोशन नेगी, वरि. लेखाकार	स. पर्यवेक्षक	01-06-2023	--
27	राजिंदर कुमार, वरि. लेखाकार	स. पर्यवेक्षक	03-07-2023	–
28	मनोज कुमार, वरि. लेखाकार	स. पर्यवेक्षक	01-08-2023	–

क्र. सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पद श्री/श्रीमती	पदोन्नति	तिथि	टिप्पणी
29	पूनम भंडारी, वरि. लेखाकार	स. पर्यवेक्षक	01-08-2023	--
30	सुरेन्द्र कुमार, वरि. लेखाकार	स. पर्यवेक्षक	01-09-2023	--
31	विक्रम कुमार मीना, वरि. लेखाकार	स. पर्यवेक्षक	01-09-2023	–
32	शकुंतला देवी, वरि. लेखाकार	स. पर्यवेक्षक	01-09-2023	--
33	हरि दास, स. पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	14-06-2023	--
34	राज कुमार, स. पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	14-06-2023	–
35	राकेश कुमार 2, स. पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	01-09-2023	--
36	ज्योति रावत, स.ले.अ. (तदर्थ)	स.ले.अ.	25-08-2023	–
37	सुमित पूनिया, डी. ए.ओ.-II	स.ले.अ.	31-08-2023	–

यदि स्वदेशाभिमान सीखना है तो मछली से सीखें जो स्वदेश (पानी) के लिए तड़प-तड़प कर जान दे देती है।
- सुभाषचंद्र बोस

मीडिया की नज़र से

कार्यालय महालेखाकार पंजाब और यू.टी. में पौधरोपण किया

चंडीगढ़, 14 जुलाई (लल्लन): कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। तेग सिंह, महालेखाकार ने पौधरोपण कर शुरू किया और आशीष सिंह उप महालेखाकार, रचना सहायक लेखा अधिकारी, मनंजय कुमार उपाध्याय ने भी पौधरोपण किया। महालेखाकार ने कल्याण अनुभाग को यह सुझाव दिया कि इस परिसर के उद्यान को और भी हरा-भरा व सुंदर रखा जाए और आने वाले समय में कम से कम 500 फूलों के पौधे लगाने का लक्ष्य रखा।



कार्यालय महालेखाकार पंजाब एवं यू.टी. की तरफ से पौधरोपण कार्यक्रम में भाग लेते हुए अधिकारी। (परमजीत)

चंडीगढ़ एकेडमी, एजी पंजाब ने जीते मुकाबले



स्पोर्ट्स रिपोर्टर | चंडीगढ़

चंडीगढ़ स्टेट सीनियर मेन एंड विमेन हॉकी चैंपियनशिप में रविवार को चंडीगढ़ हॉकी अकेडमी-42 ने वॉन्डरर्स क्लब को 15-2 के बड़े अंतर से हराया। चंडीगढ़ की ओर से परमवीर ने सर्वाधिक 5 गोल दागे। जबकि सुरिंदर और सुमित ने 3-3 गोल किए। वहीं, दूसरे मुकाबले में एजी पंजाब ने रॉक रोवर्स हॉकी क्लब को 4-2 के अंतर से मात दी। एजी पंजाब की ओर से परमिंदर ने मैच के 5वें मिनट में गोल दागकर टीम को शानदार शुरुआत दिलाई। इसके बाद चंदीप ने 19वें मिनट में दूसरा गोल टीम को मजबूत स्थित में पहुंचा दिया। दीपांशु ने 22वें मिनट में एजी पंजाब को तीसरी बढ़त दिलाई। हालांकि मैच के 49वें और 55वें मिनट में रॉक रोवर्स क्लब ने गोल कर वापसी की कोशिश जरूर की। लेकिन 58वें मिनट में परमिंदर ने गोल कर रॉक रोवर्स को जीत से दूर कर दिया। दिन के तीसरे मैच में सीआईएसएफ ने एजी हरियाणा को 4-2 के अंतर से हराया। सीआईएसएफ की ओर से वासुदेव ने 14वें, 45वें और 47वें मिनट में गोल किए। एक गोल विशालजीत ने किया। वहीं, एजी हरियाणा की ओर से सूरज और कंवलजीत ने एक-एक गोल किए। चौथे मैच में एसजीजीएस हॉकी क्लब-26 ने पीयू हॉकी को 3-2 से हराया। महिलाओं के मुकाबलों में पीयू हॉकी क्लब ने रॉक रोवर्स क्लब को 8-0 से मात दी।

कार्यालय महालेखाकार पंजाब एवं यूटी में हिंदी पखवाड़ा

अर्थ प्रकाश संवाददाता

चंडीगढ़, 29 सितंबर। कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़ में दिनांक 14 सितम्बर 2023 से 29 सितम्बर 2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। गत वर्ष की तरह इस बार भी हिंदी दिवस समारोह की शुरुआत केंद्रीकृत रूप से हुई जिसका भव्य आयोजन पुणे (महाराष्ट्र) में दिनांक 14 सितम्बर 2023 को किया गया। उक्त कार्यक्रम में कार्यालय महालेखाकार के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया था। हिंदी पखवाड़ा-2023 के विधिवत आयोजन हेतु श्री तेग सिंह, महालेखाकार ने माह के प्रथम सप्ताह में आयोजित बैठक में श्री शीशराम वर्मा, उप महालेखाकार (प्रशासन) को दायित्व सौंपते हुए कहा था कि पखवाड़े के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आवश्यक कदम उठाए जाएं और प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएं। तदनुसार तैयारियां की गयीं तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन में नरेश कौड़ा, सम्पा दास, संजीव ठाकुर, अशोक कुमार राणा, जतिन्दर पाल मलिक, जसविंदर गिल, वेद प्रकाश, मनीष, अंकित, शिवकेश आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही। 29 सितम्बर 2023 को कार्यालय में आयोजित पुरस्कार वितरण और समापन समारोह के दौरान काव्य-पल्ल का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान महालेखाकार ने हिंदी की प्रगति पर चर्चा की और इसके महत्व को बताया। राकेश रंजन मिश्र, हिंदी अधिकारी द्वारा बताया गया कि कार्यालय के कामकाज में हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति की समीक्षा स्वयं महालेखाकार करते हैं और समय-समय पर उनके प्रेरणात्मक संदेश प्राप्त होते हैं जिससे अधिकारियों और कर्मचारियों का मनोबल बढ़ता है।



कार्यालय महालेखाकार पंजाब एवं यू.टी. में हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन

(दिशा मार्ग - प्रोसन बर्मन)





कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़ में दिनांक 14 सितम्बर 2023 से 29 सितम्बर 2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। गत वर्ष की तरह इस बार भी हिंदी दिवस समारोह की शुरूआत केंद्रीकृत रूप से हुई जिसका भव्य आयोजन पुणे (महाराष्ट्र) में दिनांक 14 सितम्बर 2023 को किया गया।

उक्त कार्यक्रम में कार्यालय महालेखाकार के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया था।

हिंदी पखवाड़ा-2023 के विधिवत आयोजन हेतु तेग सिंह, महालेखाकार ने माह के प्रथम सप्ताह में आयोजित बैठक में शीशराम वर्मा, उप महालेखाकार (प्रशासन) को दायित्व सौंपते हुए कहा था कि पखवाड़े के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आवश्यक कदम उठाए जाएं और प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएं। तदनुसार तैयारियां की गयीं तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन में नरेश कौड़ा, सम्पा दास, संजीव ठाकुर, अशोक कुमार राणा, जतिन्दर पाल मलिक, जसविंदर गिल, वेद प्रकाश, मनीष, अंकित, शिवकेश आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही। 29 सितम्बर 2023 को कार्यालय में आयोजित पुरस्कार वितरण और समापन समारोह के दौरान काव्य-पल्ल का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान महालेखाकार ने हिंदी की प्रगति पर चर्चा की और इसके महत्व को बताया। राकेश रंजन मिश्र, हिंदी अधिकारी द्वारा बताया गया कि कार्यालय के कामकाज में हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति की समीक्षा स्वयं महालेखाकार करते हैं और समय-समय पर उनके प्रेरणात्मक संदेश प्राप्त होते हैं जिससे अधिकारियों और कर्मचारियों का मनोबल बढ़ता है। भाषा की संजीवनी और ऊर्जा उसकी व्यावहारिक उपयोगिता है इसलिए कार्यालय में हिंदी में कामकाज को बढ़ावा देने हेतु अनुकूल वातावरण तैयार किया गया है।

समारोह के दौरान हिंदी में मूल रूप से शासकीय कामकाज करने वाले कार्मिकों को महालेखाकार द्वारा प्रोत्साहन पुरस्कार और प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों तथा बाल चित्रकारों को भी महालेखाकार द्वारा पुरस्कृत किया गया। महालेखाकार ने राजभाषा अनुभाग के सभी कार्मिकों को हिंदी पखवाड़ा के सफल आयोजन व सराहनीय कार्य के लिए बधाई देते हुए कहा कि वे राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए अनुकरणीय कार्य करें

ध्वजारोहण





आनन्दपुर साहिब, रूपनगर, पंजाब

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ - 160017